Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِی الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ
وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ
وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ⊙

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ
وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 24

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

9 शव्वाल 1440 हिजरी कमरी 13 इहसान 1397 हिजरी शमसी 13 जून 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

इन्सानों के नफ्स अर्थात रिबात भी शिक्षित होने चाहिए उन की शक्तियां और ताकतें इस तरह की होनी चाहिए कि अल्लाह तआला का सीमाओं के नीचे चलें।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

रिबात के अर्थ

रिबात उन घोड़ों को कहते हैं जो दुश्मन की सरहद पर बाँधे जाते हैं। अल्लाह तआला सहाबा रज़ि को दुश्मनों के मुक़ाबला के लिए तय्यार रहने का हुक्म देता है और इस रिबात के लफ़्ज़ से उन्हें पूरी और सच्ची तैयारी की तरफ़ ध्यान दिलाता है। उनके सपुर्द दो काम थे। एक ज़ाहिरी दुश्मनों का मुक़ाबला और एक वह रुहानी मुक़ाबला करते थे और रिबात शब्द कोश में नफ़स और इन्सानी दिल को भी कहते हैं और फिर एक सूक्ष्म बात है कि घोड़े वही काम आते हैं जो सिधाए हुए और शिक्षा प्राप्त हों। आजकल घोड़ों की तालीम तथा तर्बीयत का इसी अंदाज़ पर लिहाज़ रखा जाता है और इसी तरह उनको सिधाया सिखाया जाता है जिस तरह बच्चों को स्कूलों में ख़ास एहतियात और ध्यान से शिक्षा दी जाती है। अगर उनको शिक्षा ना दी जाए और वे सिधाए ना जाएं तो वे बिलकुल निकम्मे हूँ और वे बजाय मुफ़ीद होने के ख़ौफ़नाक और कष्टदायक साबित हों।

यह इशारा इस बात की तरफ़ भी है कि इन्सानों के नफ़ूस अर्थात रिबात भी शिक्षा प्राप्त होने चाहिऐं और उनकी क़ुव्वतें और ताक़तें ऐसी होनी चाहिऐं कि अल्लाह तआला की सीमाओं के नीचे नीचे चलें। क्योंकि अगर ऐसा ना हो तो वे इस युद्ध और जंग का काम ना दे सकेंगे जो इन्सान और इस के ख़ौफ़नाक दुश्मन अर्थात शैतान के बीच अंदरूनी तौर पर हर क्षण और हर-आन जारी है। जैसा कि लड़ाई और मैदान जंग में इलावा शारीरित शक्ति के शिक्षा प्राप्त होना भी ज़रूरी है इसी तरह इस अंदरूनी जंग और जिहाद के लिए नफ़ूस इन्सानी की तर्बीयत और मुनासिब शिक्षा अभिप्राय है और अगर ऐसा ना हो तो इस का नतीजा यह होगा कि शैतान इस पर ग़ालिब आ जाएगा और वे बहुत बुरी तरह ज़लील और अपमानित होगा। जैसे अगर एक आदमी तोप तलवार, शस्त्र बंदूक़ इत्यादि तो रखता हो लेकिन इस के इस्तेमाल और चलाने से नावाक़िफ़ हो। तो वह दुश्मन के मुक़ाबला में कभी ज़िम्मेदारी अदा नहीं कर सकता और तीर तथा तलवार और युद्ध का सामान भी एक आदमी रखता हो और उनका इस्तिमाल भी जानता हो लेकिन इस के बाज़ू में ताक़त ना हो तो भी वह कामयाब नहीं हो सकता। इस से मालूम हुआ कि सिर्फ तरीक़ा और इस्तिमाल का तर्ज़ सीख लेना भी लाभदायत और मुफ़ीद नहीं हो सकता जब तक कि व्यायाम और कोशिश कर के बाज़ू में ताकत और क़ुव्वत पैदा ना की जाए। अब अगर एक आदमी जो तलवार चलाना तो जानता है लेकिन व्यायाम और कोशिश नहीं रखता तो युद्ध के मैदान में जा कर जूंही तीन चार बार तलवार को हरकत देगा और दो एक हाथ मारेगा उस के बाज़ू निकम्मे हो जाऐंगे और वे थक कर बिलकुल बेकार हो जाएगा और ख़ुद ही आख़िर दुश्मन का शिकार हो जाएगा।

मुजाहिदा और रियाज़त

अत: समझ लो और ख़ूब समझ लो कि केवल इलम तथा फ़न और ख़ुशक तालीम भी कुछ काम नहीं दे सकती। जब तक कि अमल और मुजाहिदा और रियाज़त ना हो। देखो सरकार भी फ़ौजों को इसी ख़्याल से बेकार नहीं रहने देती। ठीक अमन तथा आराम के दिनों में भी नक्ली जंग बरपा कर के फ़ौजों को बेकार नहीं होने देती और मामूली तौर पर चांद मारी और परेड वग़ैरा तो होती ही रहती है।

जैसा अभी मैंने बयान किया कि युद्ध के मैदान में कामयाब होने के लिए जहां एक तरफ़ तरीक़ इस्तिमाल असलह वग़ैरा की तालीम और वाक़फ़ीयत की ज़रूरत है वहां दूसरी तरफ़ व्यायाम और यथा योग्य प्रयोग की भी बड़ी भारी ज़रूरत है और इसी तरह जंग में शिक्षा प्राप्त घोड़े चाहिऐ। अर्थात ऐसे घोड़े जो तोपों और बंदूक़ो की आवाज़ से ना डरें और धूल से घबरा न जाएं तथा पीछे ना हटें बल्कि आगे ही बढ़ें। इसी तरह इन्सानी नफ़्स पूर्ण वरज़िश और पूरी रियाज़त और हक़ीक़ी शिक्षा के बिना अल्लाह के दुश्मनों के मुक़ाबिल युद्ध के मैदान में कामयाब नहीं हो सकते।

अरबी भाषा की ख़ूबी

अरबी शब्दकोष भी अजीब चीज़ है। मुक़ाबला भी इसी पर ख़त्म है। रिबात का शब्ग जो उपर वर्णन की गई आयत में आया है जहां दुनियावी जंग तथा युद्ध और जंग के फ़नून की फ़िलास्फ़ी पर आधारित है वहां रुहानी तौर पर अंदरूनी जंग और मुजाहिदा नफ़स की हक़ीक़त और ख़ूबी को भी ज़ाहिर करता है। यह एक अजीब सिलसिला है। इसी लिए अरबी ज़बान उम्मुल अलसिना (सब भाषाओं की मां) है। इस से वह काम 3.निकलते हैं जो दूसरी भाषा से मुम्किन नहीं और इंशाअल्लाह यह मआरिफ़ निहायत वज़ाहत और सुक्ष्मता से किताब "मिननुर्रहमान" के माध्यम से प्रकट होंगे जो मैंने आजकल अरबी भाषा की फ़ज़ीलत और इस को उम्मुल अल्सासिना बित करने के बारह में लिखनी शुरू की है। मालूम हो जाएगा कि यूरोपीयन लोगों की तहक़ीक़ातें बिलकुल ना-मुकम्मल और अधूरी हैं। और उनको भी पता लग जाएगा कि ज़बानों की गुम माँ भी इस ज़माना ही में जहां और गुम हुई धार्मिक सदाक़तें मिल गई हैं, मिल गई है और वह अरबी ही है। अत: अरबी ज़बान के शब्दकोष जिस्मानी सिलसिला में रुहानी सिलसिला भी दिखाती जाती है। इसलिए कि जिस्मानी मामले और जिस्मानी बातें ख़ारिजी तौर पर हमारे मुशाहिदा में आती हैं और हम उनकी अवस्था को बहुत सुविधा और आसानी से समझ सकते हैं। अत: उन पर अन्दाज़ा कर के रुहानी सिलसिला और रुहानी मामलों की फ़िलास्फ़ी समझ में आनी मुश्किल नहीं होती और यह अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़ल और बरकत है जो उसने इस अन्धेरे और ज़लालत के ज़माना में मार्फ़त का नूर आसमान से उतारा। ताकि भूले भटकूँ को रास्ता दिखलाए और ऐसा तरीक़ और अन्दाज़ा ज़ाहिर किया जो अब तक राज़ के तौर पर था। वह क्या? यही लुग़त अरब की फ़िलासफ़ी और माहीयत से इस्तिदलाल। मुबारक हैं वो लोग जो अल्लाह तआला के फ़ज़ल की क़दर करते और इस के लेने को तैयार हो जाते हैं।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 2 से 3)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-14)

जमाअत अहमदिया एकता और एक दूसरे के लिए सम्मान का एक उदाहरण है

आप के माटो मुहब्बत सब के लिए,नफ़रत किसी से नहीं की बदौलत मैंने जान लिया कि इस्लाम अमन वाला मज़हब है

मेरे लिए ख़लीफ़ा के साथ मुलाक़ात एक fascinating तजुर्बा था, ऐसालग रहा था जैसे हक़ीक़त में Jesus के सामने बैठा हूँ,जैसे बचपन में Jesus का तसव्वुर था इस को जमाअत के ख़लीफ़ा से मिलकर हक़ीक़त में महसूस किया।

जलसा सालाना बेल्जियम में शामिल होने वाले मेहमानों की प्रतिक्रयाएं।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

16 सितम्बर 2018 ई (शेष.....)

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार विभिन्न ग्रुपस ने दुआ की नज़्में और तराने प्रस्तुत किए। सब से पहले अरब दोस्तों के ग्रुप ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अरबी क़सीदा या कलबी उज़कुर अहमद,ऐनल हदा या मुफ़निल इदा तरन्नुम के साथ प्रस्तुत किया। इसके बाद अफ्रीकन दोस्तों पर आधारित ग्रुप ने अपने विशेष अंदाज़ में अपना प्रोग्राम प्रस्तुत किया और कलिमा तय्यबा का विर्द किया। इस के बाद बंगाली लोग पर आधारित ग्रुप ने अपना तराना प्रस्तुत किया और फिर इतफ़ाल पर आधारित ग्रुप ने अपना प्रोग्राम प्रस्तुत किया। इस के बाद वाक़फ़ीन नौ पर आधारित ग्रुप ने लब्बैक या इमामना लब्बैक सय्यदी तराना प्रस्तुत किया। आख़िर पर ख़ुद्दाम के ग्रुप ने ख़िलाफ़त से अह्द ववफ़ा के बारे में से एक नज़म प्रस्तुत की और इसके बाद जामिआ अहमदिया यू.के में तालीम हासिल करने वाले बेल्जियम के छात्रों ने तराना पढ़ा और फिर इस प्रोग्राम का समापन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह की नज़म है दस्त क़िबला नुमा ला-इलाहा इल्लल्लाह से किया।

जूंही यह प्रोग्राम अपने समापन हो पहुंचा जमाअत के लोगों ने बड़े उमंग और जोश के साथ नारे बुलंद किए और सारा माहौल नारों की आवाज़ से गूंज उठा। ये जलसा के समापन के अलविदाई क्षण थे और दिल इशक़ तथा मुहब्बत और फ़िदाईत के जज़बात से भरे हुए थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद कर के लोगों को अस्सलामु अलैकुम कहा और जलसा गाह से बाहर तशरीफ़ ले आए। इस मौक़ा पर आदरणीय डाक्टर मिर्ज़ा मुबश्शिर अहमद साहिब (फ़ज़ल उम्र हस्पताल रब्वह)ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से हाथ मिलाने की सआदत हासिल की। हुज़ूर अनवर ने कृपा करते हुए डाक्टर साहिब से गुफ़्तगु फ़रमाई और वापसी के प्रोग्राम के बारे में पूछा। इस के बाद महोदय ने मिशन हाऊस आकर भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। जलसा गाह से रवाना हो कर 6 बजकर 10 मिन्ट पर हुज़ूर अनवर मिशन हाऊस बैतुस्सलाम पधारे।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार 7 बजकर 20 मिन्ट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस सैशन में 22 फ़ैमिलीज़ और 12 लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। सामूहिक रूप में मुलाक़ात करने वालों की संख्या 1000 से अधिक थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने कृपा करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को कृपा करते हुए चॉकलेट प्रदान फ़रमाएं। हर एक ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। आज मुलाक़ात करने वालों में बेल्जियम की 8 जमाअतों से आने वाले दोस्त और फ़ैमिलीज़ के इलावा फ्रैंच गयाना से एक नई बैअत करने वाली औरत Linda Dilaire साहिबा ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। महोदया ने अपनी प्रतिक्रिया को प्रकट करते हुए कहा: किसी भी जलसा सालाना में शामिल होने का यह मेरे लिए पहला मौक़ा था। यहां लजना ने मेरा बहुत ख़्याल रखा जिसका मेरे दिल पर बहुत गहरा असर है। मुझे जलसा में तक़ारीर सुनने का मौक़ा मिला। इन तक़रीरों ने मेरे ईमान को मज़बूत किया। मैं यह बात यक़ीन से कह सकती हूँ कि जलसा से मेरी रूहानियत में बहुत तरक़्क़ी हुई है। यहां जलसा के माहौल और लोगों के आपस के मेल मिलाप को देखकर ऐसा लगा जैसे यह एक ही ख़ानदान के लोग हैं।

मेरा एक मक़सद जलसा में शामिल होने का यह भी था कि हुज़ूर अनवर का दर्शन करती और मुझे मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त होता। मैंने हुज़ूर अनवर का दर्शन किया और मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर के अनुकरण में नमाज़ें अदा कीं। मैंने बहुत कुछ पाया और इंशाअल्लाह भविष्य में भी जलसा में शामिल होंगी।

आमीन का आयोजन

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 8 बजकर 40 मिनटतक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ मार्की मैं तशरीफ़ ले आए। जहां प्रोग्राम के अनुसार आयोजन आमीन का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 21 बच्चोंऔर बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक-एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

प्रिय मुहम्मद ताहिर , ख़्वाजा ज़ीशान तारिक़ , हमज़ा बिन साद, अफराज़ ख़ान , ताहिर अहमद, फ़ातिह ख़ालिक़ , मुदब्बिर अहमद, सफ़ीर अहमद , दानयाल अहमद, ज़ीशान अहमद, सलमान ख़लील ।

प्रिया फ़रीहा क़ुद्दूस ,हिबा आतिफ़ , रमिया नूर, बारिया तहसीन , सुबीका अहमद, ईशा अहमद, नायाब शकूर , रुख़्सार बशीर , दुर्रेमकनून , Taiel अहमद।

आमीन के आयोजन बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमा ज़ोंकी अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

जमाअत अहमदिया बेल्जियम का यह 25 वां जलसा सालाना था जिसमें हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने शिरकत फ़रमाई। इस से पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने 14 साल पहले साल 2004 ई में बेल्जियम के जलसा सालाना में शिरकत फ़रमाई थी। इस वक़्त जलसा सालाना मिशन हाऊस के सेहन में लगाई जाने वाली मार्की में हुआ था और इस जलसा की हाज़िरी 980 थी। आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से साल 2018 ई के जलसा सालाना बेल्जियम में शामिल होने वालों की संख्या 4 हज़ार के लगभग थी और जलसा के प्रबन्धों के लिए बड़े बड़े हाल हासिल किए गए। बेल्जियम की सारी 14 जमाअतों से जमाअत के लोग जलसा में शामिल हुए। इसके इलावा इस जलसा में बेल्जियम जमाअत की तारीख़ में पहली बार दुनिया के विभिन्न देशों से जमाअत के लोग और फ़ैमिलीज़ 2 हज़ार से अधिक की संख्या में शामिल हुए। निम्नलिखित दोशों से लोग शामिल हुए: कैनेडा , फ्रांस, जर्मनी, हॉलैंड, आयरलैंड, यू.के, स्वीडन, पोलैंड, नार्वे, यू .एस.ए, इंडोनेशिया, पाकिस्तान , गाना, गेमबिया, माली, नाईजर, लाइबेरिया, योगेन्डा, टोगो, तंज़ानिया, मारीशस, फ्रैंच गयाना, माएवटी आईलैंड, गोवादे लूप , इंडिया, यू.ए.ई, कांगो किंशासा, कांगो बराज़ावेल।

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

اَلْخَيْرُ كُلُّهٗ فِي الْقُرْاٰنِ समस्त प्रकार की भलाइयां कुरआन में हैं।

वास्तविक मोमिन तो बड़ी से बड़ी कुर्बानी कर के भी डरता नहीं कि ख़ुदा तआला कब और किस तरह राज़ी हो।

रोज़े हमारे ही लाभ के लिए अल्लाह तआला ने हमारे लिए फर्ज़ किए हैं। रोज़ों से इन्सान की सेहत पर भी अच्छाप्रभाव पड़ता है । रोज़ों से इन्सानी ज़िन्दगी में अनुशासन पैदा होता है।

रोज़े से यही अभिप्राय है कि इन्सान एक रोटी को छोड़ कर जो सिर्फ जिस्म की परवरिश करती है दूसरी रोटी को प्राप्त करे जो रूह की तस्ल्ली तथा तृप्ति का कारण है।

हम सिर्फ ख़ुश हो कर रमज़ान के आने और रोज़ों की मुबारकबादें देने ही पर ना रहें बल्कि हमें अपने जायज़े लेने चाहिऐं कि क्या हम अल्लाह तआला ने जो रमज़ान के रोज़ों का जो मक़सद बयान फ़रमाया है इस के लिए कोशिश कर रहे हैं या नहीं।

तुम्हारी तमाम फ़लाह और नजात का स्त्रोत क़ुरआन में है कोई भी तुम्हारी ऐसी धार्मिक ज़रूरत नहीं जो क़ुरआन में नहीं पाई जाती। तुम्हारे ईमान का मुसद्दिक़ या मुकज़्ज़िब क़यामत के दिन क़ुरआन है और क़ुरआन के अतिरिक्त आसमान के नीचे और कोई किताब नहीं जो सीधा क़ुरआन तुम्हें हिदायत दे सके।

मोमिन तो वही है जो स्थायी रूप से नेकियों को तलाश करता है और उन्हें जारी रखता है।

अगर दुआओं की क़बूलीयत में कहीं कमी है तो हमारे अंदर ही कमी है ख़ुदा तआला का फ़रमान कभी ग़लत नहीं हो सकता।

रमज़ान मुबारक के बारे में कुरआन मजीद की आयतों , आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपदेशों की रोशनी में रोज़ों का महत्तव और मोमिनों की ज़िम्मेदारियों तथा दुआ की कुबूलियत का हिक्मत वाला वर्णन।

जमाअत अहमिदया के दुश्मनों से सुरिक्षत रहने, उम्मते मुहम्मिदया के आपस में भाईचारे के लिए तथा सारी दुनिया की तबाही से बचने के लिए दुआ की तहरीक।

आदरणीय डाक्टर ताहिर अहमद अज़ीज़ साहिब साहिब इस्लामाबाद पाकिस्तान और आदरणीय इफ्तेख़ार अहमदा साहिब अमरीका का अफसोस वाली वफात पर उन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जुम्अः के बाद नामज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 मई 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿۱۸۴﴾ أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۚ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۖ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ۚ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿۱۸۵﴾ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿۱۸۶﴾ وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ

(अल्बकरह: 184 से187)

इन आयतों का अनुवाद है कि हे लोगो जो ईमान लाए हो तुम पर (भी) रोज़ों का रखना (इसी तरह) फ़र्ज़ किया गया है जिस तरह उन लोगों पर फ़र्ज़ किया गया था जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं ताकि तुम तक़्वा धारण करो (रुहानी और अख़लाक़ी कमज़ोरियों से) बचो। (अत: तुम रोज़े रखो) कुछ गिन्ती के दिन और तुम में से जो आदमी मरीज़ हो या सफ़र में हो तो (उसे) और दिनों में संख्या (पूरी करनी) होगी और उन लोगों पर जो इस (अर्थात रोज़े) की ताक़त ना रखते हों (बतौर फ़िद्या) एक मिस्कीन का खाना देना (बशर्त सामर्थ्य) वाजिब है और जो आदमी पूरी फ़रमांबर्दारी से कोई नेक काम करेगा तो यह उस के लिए बेहतर होगा और अगर तुम इलम रखते हो तो (समझ सकते हो) कि तुम्हारे रोज़े रखना तुम्हारे लिए बेहतर है।

रमज़ान का महीना वह (महीना) है जिसके बारे में क़ुरआन (करीम) नाज़िल किया गया। (वह क़ुरआन) जो तमाम इन्सानों के लिए हिदायत (बना कर भेजा गया) है या जिसमें क़ुरआन करीम नाज़िल किया गया है और जो खुली दलीलें अपने अंदर रखता है। (ऐसी दलीलें) जो हिदायत पैदा करती हैं और उसके साथ (क़ुरआन में) इलाही निशान भी हैं इस लिए तुमसे जो आदमी इस महीने को (इस हाल में) देखे कि (ना मरीज़ हो ना मुसाफ़िर) उसे चाहिए कि इस के रोज़े रखे और जो आदमी मरीज़ हो या सफ़र में हो तो इस पर और दिनों में (संख्या पूरी करनी वाजिब होगी।) अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए तंगी नहीं चाहता और (यह हुक्म उसने इस लिए दिया है कि तुम तंगी में ना पड़ो और)ताकि तुम संख्या को पूरी कर लू और इस (बात) पर अल्लाह की बड़ाई करो कि उस ने तुमको हिदायत दी है और ताकि तुम उस के शुक्रगुज़ार बनो। और (हे रसूल) जब मेरे बंदे तुझ से मेरे बारे में पूछें (तो जवाब दे कि) मैं उनके पास ही हूँ जब दुआ करने वाला मुझे पुकारे तो मैं उस की दुआ क़बूल करता हूँ। अत: चाहिए कि वह (दुआ करने वाले भी) मेरे हुक्म को क़बूल करें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वे हिदायत पाएं।

इन आयतों में अल्लाह तआला ने रोज़ों की फ़र्ज़ीयत उस की एहमीयत इस महीने में मोमिनों की ज़िम्मेदारियों और दुआ की क़बूलीयत के तरीक़ बयान

फ़रमाए हैं। एक ऐसा महीना हमारे लिए मुक़र्रर फ़रमाया है जिसमें ख़ुदा तआला बंदों के बहुत क़रीब आ जाता है और शैतान को जकड़ देता है। अत: जब अल्लाह तआला की तरफ़ से बंदों पर इस क़दर रहमतों और फ़ज़लों के दरवाज़े खोले जा रहे हैं तो हमें किस क़दर अल्लाह तआला की बात को सुनकर रोज़ों का हक़ अदा करने की कोशिश करनी चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि अगर तुम्हें पता हो कि रमज़ान की क्या-क्या फ़ज़ीलतें हैं और अल्लाह तआला किस तरह और किस क़दर तुम पर मेहरबान होता है तो तुम यह ख़ाहिश करते कि सारा साल ही रमज़ान हो। सारा साल ही हम अल्लाह तआला के फ़ज़लों को समेटते रहें। अत: रोज़े हमारे ही फ़ायदे के लिए अल्लाह तआला ने हम पर फ़र्ज़ किए हैं। रुहानी जिस्मानी हर किस्म के फ़ायदे हम रोज़ों से हासिल कर सकते हैं । अब तो ग़ैर मुस्लिम डाक्टर भी इस बात को स्वाकीर करने वाले हो रहे हैं पहले कुछ एक थे अब तो संख्या बढ़ती जा रही है कि रोज़ों से इन्सान की सेहत पर भी अच्छा असर पड़ता है बल्कि कुछ ग़ैर मुस्लिम यह लिखने लग गए हैं कि रोज़ों से इन्सानी ज़िंदगी में डिसिप्लिन भी पैदा होता है। बहरहाल एक वास्तविक मोमिन तो यह तजुर्बा रखता है चाहे यह दुनियादार कहें या ना कहें कि रोज़े एक मोमिन की जहां जिस्मानी हालत को बेहतर करते हैं वहां इस से बहुत बढ़कर रुहानी तौर पर भी इस की हालत बेहतरी की तरफ़ ले जाने का कारण बनते हैं अत: हमें अल्लाह तआला के इस हुक्म पर अनुकरण करते हुए रमज़ान के महीने में भरपूर कोशिश करनी चाहिए कि अपनी रुहानी हालत में तरक़्क़ी करें।

इन आयतों में अल्लाह तआला ने जो बातें बयान की हैं वे यह हैं कि हर एक मोमिन और हर एक मुसलमान जो वास्तविक मुसलमान है इस पर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया है। सुबह से शाम तक भूखा रहना नहीं यह रोज़ा नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला की इच्छा इस से यह है कि एक ख़ुराक को कम करो और दूसरी को बढ़ाओ। हमेशा रोज़ेदार को यह मद्दनज़र रहना चाहिए कि इस से इतना ही मतलब नहीं है कि भूखा रहे बल्कि उसे चाहिए कि ख़ुदा तआला के ज़िक्र में मसरूफ़ रहे ताकि तबत्तुल और इन्क़िता हासिल हो। अर्थात ख़ुदा तआला से सम्बन्ध में इस की इबादत में ज़िक्र इलाही में इन्सान बढ़े और दुनिया की तरफ़ कम ध्यान हो। दुनिया के काम तो साथ रहते ही हैं वह नहीं रुकते लेकिन उनको करते हुए भी ख़ुदा तआला की याद रहे उस के आदेशों पर नज़र रहे उस का ज़िक्र होता रहे। आप फ़रमाते हैं कि अत: रोज़े से यही मतलब है कि इन्सान एक रोटी को छोड़कर जो जिस्म की परवरिश करती है दूसरी रोटी को हासिल करे जो रूह की तसल्ली और तृप्ति का कारण है। जो लोग केवल ख़ुदा के लिए रोज़े रखते हैं और केवल रस्म के तौर पर नहीं रखते उन्हें चाहिए कि अल्लाह तआला की हमद और तस्बीह और तहलील में लगे रहें।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 9 पृष्ठ 123)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाया कि अल्लाह तआला को तुम्हारे भूखा रहने से कोई ग़रज़ नहीं है।

(बुख़ारी किताबुस्सौम बाब मन ला यदअ कौलज़ौर अलअमल बेही फिस्सौम हदीस 1903)

फिर अल्लाह तआला यह बयान फ़र्मा कर कि रोज़ा तुम पर फ़र्ज़ किया गया है इस आयत में फ़रमाता है जो पहली आयत है कि इस लिए फ़र्ज़ है कि ताकि तुम तक़्वा धारण करो और तक़्वा क्या है तक़्वा यह है कि तुम रुहानी और अख़लाक़ी कमज़ोरियों से बचो। जैसा कि पहले मैंने बयान किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला को तुम्हारे भूखा रहने से कोई ग़रज़ नहीं जब तक रोज़ा तुम्हारे अन्दर तक़्वा का वह स्तर पैदा ना करे जिस से तुम तमाम रुहानी कमज़ोरियों और अख़लाक़ी कमज़ोरियों से अपने आपको बचाओ रोज़ा रखना बेफ़ाइदा है। और तक़्वा की वज़ाहत हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर इस तरह फ़रमाई। आप फ़रमाते हैं कि

मुत्तक़ी बनने के लिए यह ज़रूरी है कि बाद इस के कि मोटी बातों जैसे व्यभिचार, चोरी हुक़ूक़ छीन लेना, (लोगों के हुक़ूक़ की मार लेना, हक़ मारना) रिया (बनावट) उजब, हिक़ारत बुख़ल को छोड़ने में पक्का हो। (अर्थात ये बुराईयां जो हैं उनको छोड़ने में पक्का हो।) तो गन्दे आचरण से परहेज़ कर के उनके मुक़ाबला पर (ये अख़लाक़ जो बुरे हैं उनसे परहेज़ कर के इस के मुक़ाबला पर) अच्छे अख़लाक़ में तरक़्क़ी करे। (अच्छे अख़लाक़ अपनाए।) लोगों से सदव्यवहार(से पेश आए) लोगों से सद्व्यवहार हमदर्दी से पेश आए। (अपने आचरण बेहतर करे।) आप फ़रमाते हैं ख़ुदा तआला के साथ सच्ची वफ़ा और सिदक़ दिखलाए। (यह भी तक़्वा के लिए ज़रूरी है रूहानियत के लिए ज़रूरी है। सच्ची वफ़ा और सच्चा सम्बन्ध हो।) ख़िदमतों के मक़ाम महमूद तलाश करे।(इस में अल्लाह तआला के जो हुक़ूक़ हैं वे भी आ गए अल्लाह तआला के अदेशों को पूरा करना और लोगों के जो सम्बन्ध हैं उनकी ख़िदमत है वे भी आ गई। अर्थात ऐसी बेनफ़्स ख़िदमत हो कि लोग कहें कि यह वास्तव में ख़ुदा तआला के लिए ख़िदमत कर रहा है किसी किस्म का कोई अपना कोई ज़ाती लाभ ना हो।) फ़रमाया कि इन बातों से इन्सान मुत्तक़ी कहलाता है और जो लोग इन बातों की साक्षात मुर्ति होते हैं (जिन में सब चीज़ें जमा हो जाएं।) वही असल मुत्तक़ी होते हैं। अर्थात अगर एक गुण अलग अलग रूप से किसी में हो तो उसे मुत्तक़ी नहीं कहेंगे जब तक बहैसीयत मजमूई अच्छे अख़लाक़ इस में ना हूँ और ऐसे ही शख़्सों के लिए لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (अल्बकरह: 63) अर्थात ना ही उनको कोई ख़ौफ़ होगा और ना ही वह ग़म करेंगे अल्लाह तआला ने उनको यह ज़मानत दे दी और इस के बाद उनको क्या चाहिए जब अल्लाह तआला की यह ज़मानत मिल गई। अल्लाह तआला ऐसों का मुतवल्ली हो जाता है जैसा कि वह फ़रमाता है وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ। (सूरह अल्आराफ 197) हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला उनके हाथ हो जाता है जिस से वह पकड़ता है उनकी आँख हो जाता है जिससे वह देखते हैं उनके कान हो जाता है जिनसे वह सुनते हैं उनके पांव हो जाता है जिनसे वह चलते हैं और एक और हदीस में है कि जो मेरे वली की दुश्मनी करता है मैं इस से कहता हूँ कि मेरे मुक़ाबले के लिए तैयार रहो। एक जगह फ़रमाया कि जब कोई ख़ुदा के वली पर हमला करता है तो ख़ुदा तआला इस पर ऐसे झपट कर आता है जैसे एक शेरनी जिससे कोई उस का बच्चा छीने तो वह ग़ज़ब से झपटती है ।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 400-401)

अत: रोज़ों का हक़ अदा कर के जब तक़्वा के यह स्तर हूँ तो तभी वे रोज़े भी एक इन्सान को एक मोमिन को एक मुसलमान को अल्लाह तआला की ढाल के पीछे ले आते हैं।

हज़रत अबू हुरैर रज़ि से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इन्सान का हर कर्म उस की ज़ात के लिए होता है सिवाए रोज़ों के। अत: रोज़ा मेरे लिए रखा जाता है अल्लाह तआला फ़रमाता है कि रोज़ा इन्सान मेरे लिए रखता है वे लोग जो वास्तविक मोमिन हैं वह अल्लाह तआला के लिए रोज़ा रखते हैं और फिर फ़रमाया कि जो मेरी ख़ातिर रोज़ा रखता है मैं ही इस का बदला होता हूँ कि मैं इस को बदला दूँगा अपनी तरफ़ से जो चाहूँ और रोज़े ढाल हैं। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह भी फ़रमाया कि रोज़े ढाल हैं और जब तुम में से किसी का रोज़ा हो तो वह नफ़्सानी बातों और गाली ग्लोच ना करे किसी किस्म की तामिसक बातें ना हूँ गाली ग्लोच ना हो और अगर उसे कोई गाली दे या इस से झगड़ा करे तो उसे जवाब में कहना चाहिए कि मैं तो रोज़ेदार हूँ। मैं किसी किस्म की लग़वयात (व्यर्थ बातों) में नहीं पड़ता। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह बयान करने के बाद कि इस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की जान है कि रोज़ा रखने वालों के मुँह की जो मुँह की बू रोज़ादार के मुँह की बू अल्लाह तआला के नज़दीक कस्तूरी से ज़्यादा अच्छी है । इस की जो ख़ुशबू है वह कस्तूरी की ख़ुशबू से ज़्यादा अच्छी है। आपने फ़रमाया कि रोज़ादार के लिए दो ख़ुशियां हैं जो उसे ख़ुश करती हैं एक जब वह रोज़ा इफ़तार करता है तो ख़ुश होता है कि अल्लाह तआला ने इस के रोज़े के इफ़तारी के सामान पैदा फ़रमाए और दूसरे जब वह अपने रब से मिलेगा तो रोज़े की वजह से ख़ुश होगा क्योंकि वहां फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं इस का बदला हूँ मैं इस का बदला दूँगा और वह जो असीमित अज्र जो अल्लाह तआला देगा जो अल्लाह तआला के लिए रोज़े रखता है तो वहां उस की ख़ुशी का मुक़ाम ही और होगा।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुस्सौम हदीस 1904)

अत: यह वह स्तर है तक़्वा का जो एक वास्तविक रोज़ेदार को हासिल करना चाहिए और वास्तविक रोज़ेदार फिर हासिल करता है कि रोज़ा दुनिया की साभी प्रकार की गन्दिगयों से पाक हो कर रखा जाए और हर किस्म की रुहानी और अख़लाक़ी कमज़ोरियों से बचते हुए रोज़ेदार अपना दिन गुज़ारे। इस बात पर ख़ुश ना हो जाए कि मैंने रोज़ा रखा है दुनिया में कितने ही रोज़ेदार हैं जो बज़ाहिर रोज़ा

रखते हैं लेकिन ना ही उनकी नमाज़ों के वह स्तर हैं जो होने चाहिऐं ना ही उनके अख़लाक़ के वह स्तर हैं जो होने चाहिऐं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो यह फ़रमाया है कि शैतान इस महीने में जकड़ा जाता है उसे बांध दिया जाता है तो फिर दुनिया में रमज़ान के महीने में भी बुराईयां क्यों जारी रहती हैं? रोज़ा ढाल उनके लिए बनता है शैतान के हमलों से उन्हें बचाया जाता है जो रोज़े की हक़ीक़त को समझते हुए तक़्वा धारण करते हैं। अत: यह वह असल मक़सद है जो हमें हर वक़त अपने सामने रखना चाहिए वर्ना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया है कि बेशक रमज़ान में जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्नुम के दरवाज़ों को ताले लगा दिए जाते हैं और शैतानों को ज़ंजीरों में बांध दिया जाता है

(सहीह मुस्लिम किताबुस्सयाम बाब फज़ल शहर रमज़ान हदीस 1079)

लेकिन इस के बावजूद आपने यह भी सतर्क फ़र्मा दिया इस बात की तरफ़ भी तवज्जा दिलाई कि अगर फिर भी कोई रमज़ान को पाए और बख़्शा ना जाए तो फिर कब बख़्शा जाएगा।

(सुनन अत्तिरमजी अब्वाबुद्अवात हदीस 3545)

अत: यह बात आप हमें फ़र्मा रहे हैं। मुसलमान कहलाने वालों को फ़र्मा रहे हैं उन लोगों को फ़र्मा रहे हैं जिनको अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया कि रोज़ा तुम्हारे पर फ़र्ज़ किया गया है ताकि तुम इन दिनों में सिर्फ और सिर्फ ख़ुदा तआला की इबादत और अख़लाक़ी स्तरों की बुलंदियों को हासिल करने की कोशिश करो लेकिन अगर नहीं करोगे तो सिर्फ रमज़ान का आना शैतान का जकड़ा जाना जन्नत के दरवाज़े खुलना जहन्नुम के दरवाज़ों पर ताले लगना कोई फ़ायदा नहीं देगा। यह सतर्क करना आपने फ़र्मा दिया कि अल्लाह तआला की इतनी बड़ी रहमत के बावजूद अगर बख़शिश के सामान नहीं हो सके तो फिर कब होंगे? अत: हम सिर्फ ख़ुश हो कर रमज़ान के आने और रोज़ों की मुबारकबादें देने ही पर ना रहें बल्कि हमें अपने जायज़े लेने चाहिऐं कि क्या हम अल्लाह तआला ने जो रमज़ान के रोज़ों का जो मक़सद बयान फ़रमाया है इस के लिए कोशिश कर रहे हैं या नहीं। अल्लाह तआला हम सबको उस को प्राप्त करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और अपनी बख़शिश और मग़फ़िरत की चादर में हमें लपेटे रखे।

फिर अगली आयत में अल्लाह तआला यह भी फ़रमाता है कि किन हालतों में तुम रोज़े से रुख़स्त ले सकते हो। लेकिन यह बताने से पहले यह स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह तआला ने जो यह फ़रमाया कि मैं रोज़े का ख़ुद बदला बनता हूँ और मोमिनों को खासतौर पर बख़शिश के सामान कर रहा हूँ तो यह ख़्याल ना आए कि हम रोज़ा रखकर कोई बहुत बड़ी क़ुर्बानी कर रहे हैं जिसकी वजह से अल्लाह तआला की मेहरबानी और शफ़क़त और बख़शिश की चादर हम पर फैलाई गई है। बेशक अल्लाह तआला के रहम और उस की शफ़क़त बड़ी वसीअ की गई है लेकिन यह कोई ऐसी भी ग़ैरमामूली क़ुर्बानी नहीं। सेहरी के वक़्त भी हम पेट भर कर खा लेते हैं इफ़तारी के वक़्त भी अपनी इच्छा के मुताबिक़ हर कोई खा लेता है और फिर कौन सी ऐसी स्थायी क़ुर्बानी है साल में कुछ गिन्ती के दिन ही हैं। कुछ लोग रोज़ा रखकर बड़े फ़ख़र से कहते हैं कि हम ने रोज़ा रखा हुआ है तो यह कोई बहुत बड़ी क़ुर्बानी नहीं है जिस के इज़हार हों बल्कि वास्तविक मोमिन तो बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी कर के भी डरता है कि ख़ुदा तआला कब और किस तरह राज़ी हो कहां यह कि इज़हार किया जाए। बहरहाल अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह गिन्ती के कुछ दिन हैं साल के दिनों का बारहवाँ हिस्सा हैं। फिर फ़रमाया तो यह कोई ऐसी बात नहीं है कि तुम्हारी कोई बहुत बड़ी क़ुर्बानी है फिर फ़रमाया कि इस में अल्लाह तआला तुम्हें अपनी रहमत से नवाज़ रहा है इन गिन्ती के कुछ दिनों में भी अगर इस दौरान तुम बीमार हो जाते हो या सफ़र आ जाता है तो रोज़े से इन दिनों में रुख़स्त है लेकिन यह संख्या जो छूटे हुए रोज़े हैं साल के दौरान किसी वक़्त भी उनको पूरा करना होगा और जो स्थायी मरीज़ हैं बहाना नहीं है बल्कि डाक्टर ने यह कहा है कि रोज़े नहीं रखने तो फिर एक मिस्कीन को रोज़े रखवाओ अगर सामर्थ्य है और सामर्थ्य की अवस्था में यह ज़रूरी है सिवाए उस के कि कोई इस हद तक माली लिहाज़ से कमज़ोर हो कि इस का ख़ुद सदक़े और इमदाद पर गुज़ारा हो रहा हो बाक़ी हर एक को जो कुछ खाता है वह वही ख़ुराक से एक मिस्कीन को रोज़े रखवाने ज़रूरी हैं। हाँ अगर उस की सामर्थ्य है बढ़ कर सामर्थ्य है तो यह भी ठीक है कि तुम फिर फ़िद्या भी दे दो और बाद में रोज़े भी रख लू।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने इस बारे में फ़रमाया कि ख़ुदा हर आदमी को इस के सामर्थ्य से बाहर दुख नहीं देता सामर्थ्य के अनुसार आप फ़रमाते हैं कि जितना सामर्थ्य है जितनी गुंजाइश है जो ख़ुद खाते पीते हो उस के अनुसार पिछलों का फ़िद्या दे दो और भविष्य में वादा करो कि सब रोज़े ज़रूर रखूंगा।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 350)

आपने फ़रमाया कि एक बार मेरे दिल में ख़्याल आया कि फ़िद्या किस लिए मुक़र्रर किया गया है तो मालूम हुआ(सोचा मैंने तो फिर मुझ पर यह खुला) कि तौफ़ीक़ के लिए। इसलिए मुक़र्रर किया गया है ताकि अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे ताकि रोज़े की तौफ़ीक़ इस से हासिल हो। फ़रमाया कि ख़ुदा तआला तो सम्पूर्ण सामर्थय वाला है वह अगर चाहे तो एक मदक़ूक़(बीमार) को भी रोज़े की ताक़त प्रदान कर सका है ऐसा मरीज़ जिसको दिक(टीबी) की बीमारी है टी बी का मरीज़ है इस को भी अल्लाह तआला ताक़त दे सकता है कि इस की सेहत अच्छी कर दे और रोज़ा रख ले तो फ़िद्या से यही आप फ़रमाते हैं कि फ़िद्या से यही मक़सूद है कि वह ताक़त हासिल हो जाए और यह ख़ुदा के फ़ज़ल से ही होता है। आप फ़रमाते हैं कि अत: मेरे नज़दीक ख़ूब है कि इन्सान दुआ करे कि इलाही यह तेरा एक मुबारक महीना है और मैं इस से महरूम रहा जाता हूँ और क्या मालूम कि अगले साल ज़िंदा रहूं या ना या उन फ़ौत शूदा रोज़ों को जो छूट गए रोज़े उनको अदा कर सकूं या ना कर सकूं दुबारा सेहत इजाज़त दे या ना दे और उस से तौफ़ीक़ मांगे। आप फ़रमाते हैं यह बातें कह कि इन्सान अल्लाह तआला से तौफ़ीक़ तलब करे ।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 258)

अत: फ़िद्या आरज़ी मरीज़ भी दे सकते हैं और फिर सफ़र ख़त्म होने पर सेहत होने पर रोज़ा रखना भी ज़रूरी है ये दोनों चीज़ें इस से साबित होती हैं। आपने फ़रमाया कि जो सेहत पाकर रोज़े रखने के काबिल हो जाते हैं उनके लिए सिर्फ फ़िद्या का ख़्याल करना इबाहत का दरवाज़ा खोलना है। जो ऐसी सेहत है जो सेहत रमज़ान के बाद पा ली या रमज़ान में बीमार हुए तो बाद में सेहत पाने वाले हो गए। अगर वह सिर्फ यही कह दें कि हम ने रमज़ान में रोज़े नहीं रखे और फ़िद्या दे दिया था। तो यह तो इबाहत का दरवाज़ा खोलना है बिना वजह की इजाज़त है के रास्ते खोलना है ग़लत बिदअतें पैदा करना है। अगर फ़िद्या दे भी दिया है रमज़ान में तब भी रमज़ान के बाद फिर रोज़े रखने ज़रूरी हैं साल के दौरान किसी वक़्त भी रखे जा सकते हैं। फ़रमाते हैं कि हाँ स्थायी मरीज़ दूध पिलाने वाली औरतें गर्भवती औरतें जो हैं इस पर इस हालत में कि साल गुज़र जाए उन के लिए सिर्फ फ़िद्या ही काफ़ी होता है लेकिन फ़िद्या के साथ इस महीना में इबादतों और ज़िक्र इलाही और दूसरी नेकियों को जारी रखना ज़रूरी है। यह नहीं कि फ़िद्या दे दिया तो हमारी हर चीज़ से हम फ़ारिग़ हो गए। तो यह भी रमज़ान का फ़ैज़ पाने वाले होंगे अगर रोज़े ना भी रख रहे हों और फ़िद्या दे दें और बाक़ी नेकियां जारी रखें सिर्फ फ़िद्या देकर नमाज़ों को भूल जाना और दूसरी नेकियों को भूल जाना यह सिर्फ़ मोमिन नहीं बना देता वास्तविक मोमिन नहीं बना देता। रमज़ान की बरकतों में हिस्सादार नहीं बना देता।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात जिल्द 9 पृष्ठ 433)

फिर अल्लाह तआला इस आयत में यह फ़रमाता है कि जो भी नेकी तुम पूरी फ़रमांबर्दारी से करते हो दिल नहीं भी चाह रहा हो तो करते हो कि अल्लाह तआला का हुक्म है तो अल्लाह तआला उस के बेहतर नताइज पैदा करे गा। कुछ के नज़दीक फुमन ततवा खेरा का यह भी मतलब है कि कोई काम नफ़ली तौर पर भी तुम करते हो तो यह भी तुम्हारे लिए बेहतर है दोनों मतलब उस के हैं अर्थात ज़ाइद फ़िद्या दे दिया नफ़ली तौर पै या एक के बजाय दो मिस्कीनों को खुला दिया या पता होने के बावजूद कि आज रोज़ा किसी वजह से नहीं रख सका कल रख लूँगा फिर भी फ़िद्या दे दिया तो यह ज़ाइद नेकी है अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि अल्लाह तआला तुम्हें नेकियों के ख़ाह वह अपने पर बोझ डाल कर की जाएं या नफ़ली नेकियां की जाएं ख़ुशी से की जाएं। अल्लाह तआला उस का अज्र देता है। इस आयत के आख़िर में फिर अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया कि तुम्हारे लिए रोज़े रखना हर लिहाज़ से तुम्हारे लिए बेहतर है। फिर इस से अगली आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इस महीने में हमने क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया जो तुम्हारे लिए हिदायत का माध्यम है और खुले और स्पष्ट दलील और निशान अपने अंदर रखता है।

अत: क़ुरआन को रमज़ान के महीने से भी एक ख़ास सम्बन्ध है इसी महीने में रोज़ों के साथ उस के पढ़ने इस पर ग़ौर करने उस के आदेशों को तलाश कर

के उन पर अनुकरण करने की कोशिश करनी चाहिए ताकि अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण कर के हम रमज़ान के रोज़ों से वास्तविक फ़ैज़ उठा सकें। हर एक क़ुरआन करीम के गहरे अर्थों की गहराई तक ख़ुद नहीं पहुंच सकता इस लिए क़ुरआन करीम की तिलावत और अनुवाद के साथ जो कि वह ख़ुद पढ़ सकता है जमाअत की तरफ़ से जहां-जहां मस्जिदों में दर्स का प्रबन्ध है इस से फ़ायदा उठाना चाहिए। इसी तरह म टी ए पर बाक़ायदा दर्स का प्रबन्ध है इस से लाभ उठाना ज़रूरी है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे के दर्स इस पर चल रहे हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भी यही इरशाद है कि इस महीने में क़ुरआन करीम की तिलावत ज़्यादा किया करो। क़ुरआन करीम की तिलावत की तरफ़, क़ुरआन करीम पढ़ने की तरफ़ तवज्जा एक अहमदी को तो आम दिनों में भी बहुत ज़्यादा होनी चाहिए लेकिन रमज़ान में तो खासतौर पर इस का प्रबन्ध ज़रूरी है वर्ना सिर्फ रोज़े रखना बेफ़ाइदा है। खासतौर पर अल्लाह तआला ने इस महीने में क़ुरआन करीम के नाज़िल होने का ज़िक्र फ़रमाया है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ताकीद फ़रमाई है। हम ख़ुश क़िस्मत हैं कि अल्लाह तआला ने हमें इस ज़माना में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को मानने की तौफ़ीक़ प्रदान की जिन्होंने हमें जहां क़ुरआन करीम के भेद और तफ़सीर और अर्थों के नए नए दृष्टिकोण बताए वहां इस पर अनुकरण करने और क़ुरआन करीम को इज़्ज़त देने की और उसे पढ़ने और ग़ौर करने की तरफ़ भी ख़ास ध्यान दिलाया है और बताया कि तुम्हें किस ख़ास तवज्जा से इस को पढ़ कर इस पर अनुकरण करना चाहिए और अपनी हालतों में क्या तबदीली पैदा करनी चाहिए अत: एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"उलूम ज़ाहिरी और उलूम कुरानी के प्राप्त करने के बीच में एक महान फ़र्क़ है जो ज़ाहिरी दुनियावी उलूम हैं और क़ुरआन के उलूम हैं उनके बीच एक बहुत बड़ा फ़र्क़ है फ़रमाते हैं कि दुनयावी और रस्मी उलूम के हासिल करने के लिए तक़्वा शर्त नहीं फ़रमाया कि सर्फ तथा नहव, खगोल शास्त्र, फलसफ़ा, तबाअत, पढ़ने के लिए यह ज़रूरी बात नहीं है। (सर्फ नहव पढ़ लिया या रसायन विज्ञान पढ़ लिया फ़लसफ़ा पढ़ लिया एस्ट्रानौमी इत्यादि पढ़ लिया मेडीसन इत्यादि पढ़ने के लिए यह ज़रूरी बात नहीं है कि तक़्वा ज़रूरी हो या यह ज़रूरी नहीं है कि) वह नमाज़ रोज़ा का पाबंद हो। यह बड़ी अहम बात है क़ुरआन करीम को समझने के लिए रोज़ों की पाबंदी भी ज़रूरी है इबादतों की पाबंदी भी ज़रूरी है नमाज़ों की पाबंदी भी ज़रूरी है तक़्वा में बढ़ना भी ज़रूरी है फ़रमाया कि ज़रूरी नहीं है कि वह नमाज़ रोज़ा का पाबंद हो और अल्लाह तआला के आदेशों तथा मना बातों मद्दनज़र रखता हो जो अल्लाह तआला के हुक्म हैं जिनके करने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है और जिन को ना करने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है उनको हर वक़त सामने रखे मद्दनज़र रखे। यह आम आदमी के लिए ज़रूरी तो नहीं है लेकिन कुरान के उलूम को हासिल करने के लिए यह ज़रूरी है। फ़रमाया कि अपने हर कर्म और कथन को जो दुनियावी उलूम हैं उनके हासिल करने के लिए ज़रूरी नहीं है लेकिन क़ुरआन करीम को पढ़ने के लिए ज़रूरी है इस के इलम को हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि अल्लाह तआला के समस्त आदोशों को तथा मनाही को आदमी सामने रखे। आप फ़रमाते हैं कि अपने हर कर्म और कथन को अल्लाह तआला के आदेशों की हुकूमत के नीचे रखे बल्कि कई बार देखा गया है कि दुनियावी उलूम के माहिर और इच्छुक नास्तिक फितरत हो कर हर किस्म की दुराचार तथा कदाचार में पीड़ित हो होते हैं। आज दुनिया के सामने एक ज़बरदस्त तजुर्बा मौजूद है फ़रमाते हैं कि आज दुनिया के सामने एक ज़बरदस्त तजुर्बा मौजूद है यूरोप और अमरीका बावजूद के वह लोग संसार के उलूम में बड़ी बड़ी तरक़्कीयां कर रहे हैं और आए दिन नई ईजादें करते रहते हैं लेकिन उनकी रुहानी और अख़लाक़ी हालत बहुत ही लज्जा के योग्य है और आजकल तो हम देख रहे हैं कि इस ज़माने से बढ़कर आज़ादी के नाम पर अख़लाक़ी गिरावटों में बढ़ते चले जा रहे हैं। आप फ़रमाते हैं कि लंदन के पार्कों और पेरिस के होटलों के हालात जो कुछ प्रकाशित हुए हैं हम तो उनका ज़िक्र भी नहीं कर सकते मगर उलूम आसमानी और कुरान के भेद की वाक़फ़ीयत के लिए तक़्वा पहली शर्त है इस में सच्ची तौब: की ज़रूरत है ऐसी तौब: जो सच्ची तौबा हो। जब तक इन्सान पूरी विनम्रता और विनय के साथ अल्लाह तआला के आदेशों को ना उठा ले अल्लाह तआला के हुक्मों पर अनुकरण ना करे और इस के प्रताप और ताकत से भयभीत हो कर विनम्रता के साथ ना झुके कुरानी उलूम का दरवाज़ा नहीं खुल सकता और रूह के इन गुणों और कुव्वतों की परवरिश का सामान उस को क़ुरआन शरीफ़ से नहीं मिल सकता जिसको पा कर रूह में एक आन्नद और तसल्ली पैदा होती है।

अत: क़ुरआन करीम के उलूम को समझने के लिए तक़्वा बहुत ज़रूरी है। आपने फ़रमाया कि क़ुरआन शरीफ़ अल्लाह तआला की किताब है और इस के उलूम ख़ुदा के हाथ में हैं। अत: उस के लिए तक़्वा बतौर नर्दबान के है अर्थात सीढ़ी के है। तक्वा जो है बतौर सीढ़ी के है। वह सीढ़ी लगाओगे, तक़्वा की सीढ़ी इस्तेमाल करोगे तो कुरानी उलूम की समझ हासिल होगा। फ़रमाया कि फिर कैसे मुम्किन हो सकता है कि बेईमान शरीर ख़बीस नफ़्स, दुनियावी ख़्वाहिशों के कैदी उनसे लाभांवित हों इस लिए अगर एक मुसलमान मुसलमान कहला कर चाहे वह सर्फ़ तथा नहो मआनी- तथा बदी इत्यादि उलूम का कितना ही बड़ा फ़ाज़िल क्यों ना हो दुनिया की नज़र में शेख़ुल कुल फ़िल अकल बना बैठा हो लेकिन अगर सारे उलूम उस को आते हों ग्रेमर इत्यादि भी आती हो अरबी भाषा भी इस को बड़ी अच्छी आती हो क़ुरआन करीम के अर्थ भी बड़ी अच्छी तरह कर सकता हो लेकिन अगर नफ्स का तज़किया नहीं करता तो क़ुरआन शरीफ़ के उलूम से इस को हिस्सा नहीं दिया जाता। फ़रमाया कि मैं देखता हूँ कि इस वक़्त दुनिया का ध्यान सांसारिक उलूम की तरफ़ बहुत झुका हुआ है और पश्चिमी रोशनी ने सारी दुनिया को अपनी नई ईजादों और आविष्कारों में हैरान कर रखा है मुसलमानों ने भी अगर अपनी फ़लाह और बेहतरी की राह सोची तो बदक़िस्मती से यह सोची है कि वह मग़रिब के रहने वालों को अपना इमाम बना लें दुनिया की तरफ़ पड़ गए हैं और यह तरक़्क़ी जो दुनियावी तरक़्क़ी है उसी को सब कुछ समझने लग गए हैं। फ़रमाया यह तो नई रोशनी के मुसलमानों का हाल है जो लोग पुराने फ़ैशन के मुसलमान कहलाते हैं और अपने आपको धर्म का सहायक समझते हैं उनकी सारी उम्र के ज्ञान का ख़ुलासा यह है और सारंक्ष यह है कि सर्फ तथा नहव के झगड़ों और उलझेड़ों में फंसे हुए हैं और ज़ालीन के लफ़्ज़ पर मर मिटे हैं। इसी बात पर उलझे हुए हैं कि ग्रेमर क्या है अरबी की सर्फ किया है नहव कया है और किस तरह तलफ़्फ़ुज़ सही तरह अदा करना है। फ़रमाया कि क़ुरआन शरीफ़ की तरफ़ बिलकुल ध्यान ही नहीं है और हो क्योंकर जो नफ़स के तज़किया की तरफ़ ध्यान ही नहीं है। अत: आप फ़रमाते हैं कि अहमदियों को इस बात पर ग़ौर करना चाहिए कि सिर्फ दुनिया में ना पड़ जाओ बल्कि क़ुरआन करीम के उलूम को भी हासिल करने की कोशिश करो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 425 से 427)

फिर एक अवसर पर एक साहिब ने सवाल किया कि क़ुरआन शरीफ़ किस तरह पढ़ा जाए। आपने फ़रमाया कि क़ुरआन शरीफ़ तदब्बुर और तफ़क्कुर और ग़ौर से पढ़ना चाहिए। हदीस शरीफ़ में आया है कि رُبَّ قَارٍ يَلْعَنُهُ الْقُرْاٰن अर्थात बहुत से ऐसे क़ुरआन करीम के क़ारी होते हैं जिन पर क़ुरआन करीम लानत भेजता है जो आदमी क़ुरआन पढ़ता और इस पर अनुकरण नहीं करता इस पर क़ुरआन मजीद लानत भेजता है। फ़रमाया तिलावत करते वक़्त जब क़ुरआन करीम की

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

आयत रहमत पर गुज़र हो अर्थात कि ज़िक्र हो अल्लाह तआला की रहमत का तो वहां ख़ुदा तआला से रहमत तलब की जाए और जहां किसी क़ौम के अज़ाब का ज़िक्र हो क़ुरआन करीम में" आप फ़रमाते हैं तो वहां ख़ुदा तआला के अज़ाब से ख़ुदा तआला के आगे पनाह की दरख़ास्त की जाए तौबा और इस्तिग़फ़ार की जाए पनाह मांगी जाए अल्लाह तआला से और तदब्बुर और ग़ौर से पढ़ना चाहिए और इस पर अनुकरण किया जाए।

(मल्फूज़ात भाग 9 पृष्ठ 199 से 200)

अत: यह है क़ुरआन करीम पढ़ने का तरीक़। इन दिनों में जब हमें क़ुरआन करीम पढ़ने की तरफ़ ख़ास तवज्जा हुई है तो इस सोच और इस अंदाज़ से पढ़ने की हमें कोशिश करनी चाहिए। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि जो मनुष्य क़ुर्आन के सात सौ आदेशों में से एक छोटे से आदेश को भी टालता है वह मुक्ति द्वार को स्वयं अपने लिए बंद करता है। वास्तविक और पूर्ण मुक्ति के मार्ग क़ुर्आन ने प्रदर्शित किए, शेष सभी उसकी तुलना में छाया मात्र थे। अत: तुम क़ुर्आन का पूरी सतर्कता से अध्ययन करो और उससे अत्यधिक प्रेम करो, ऐसा प्रेम जो तुम ने किसी से न किया हो। क्योंकि जैसा ख़ुदा ने मुझे संबोधित करते हुए फ़रमाया-

اَلْخَيْرُ كُلُّهٗ فِي الْقُرْاٰنِ

"अलख़ैरो कुल्लुहू फ़िलक़ुर्आन"

कि समस्त प्रकार की भलाइयां क़ुर्आन में हैं। यही बात सत्य है।" फरमाते हैं "खेद है उन लोगों पर जो किसी अन्य वस्तु को उस पर प्राथमिकता देते हैं।" फरमाया "तुम्हारी सम्पूर्ण सफलता और मुक्ति का स्रोत क़ुर्आन में निहित है। तुम्हारी कोई भी धार्मिक आवश्यकता ऐसी नहीं जिसका समाधान क़ुर्आन में न हो। प्रलय के दिन तुम्हारे ईमान के सच्चे या झूठे होने की कसौटी क़ुर्आन है। आकाश के नीचे क़ुर्आन के अतिरिक्त और कोई पुस्तक नहीं जो किसी अन्य पर निर्भर हुए बिना तुम्हारा पथ-प्रदर्शन कर सके। " कुरआन के मार्ग से गुज़रोगो ते तब ही हिदायत मिलेगी। फरमाया "ख़ुदा ने तुम पर आपार कृपा की है जो क़ुर्आन जैसी पुस्तक तुम्हें प्रदान की। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि वह पुस्तक जो तुम्हारे सम्मुख पढ़ी गई यदि ईसाइयों के सम्मुख पढ़ी जाती तो वे तबाह न होते। यह उपकार और पथ-प्रदर्शन जो तुम्हें उपलब्ध किया गया यदि (तौरात) को छोड़ कर यहूदियों को उपलब्ध कराया जाता तो उनके कुछ समूह प्रलय का इन्कार न करते। अत: इस उपकार के महत्त्व को समझो जो तुम्हारे साथ किया गया।" फरमाया कि "यह अति उत्तम उपकार है यह अपार संपत्ति है। यदि क़ुर्आन न आता तो समस्त संसार एक अपवित्र और तुच्छ लोथड़े की भांति था। **क़ुर्आन** वह पुस्तक है जिसके समक्ष सभी पथ-प्रदर्शन तुच्छ हैं।

(कश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन भाग 13 पृष्ठ 26-27)

अत: क़ुरआन करीम पढ़ने उसे समझने और इस की हिदायतों पर अनुकरण करने की तरफ़ हमें खासतौर पर ध्यान देने की ज़रूरत है। रमज़ान में बहुत से लोगों की इस तरफ़ तवज्जा पैदा होती है तो फिर उसे उन्हें अपनी ज़िन्दगी का स्थायी हिस्सा बनाने की ज़रूरत है कि अल्लाह तआला खासतौर पर रमज़ान के महीने में क़ुरआन करीम पढ़ने की तरफ़ जो मोमिनों को तवज्जा दिलाई है तो इस लिए कि इस कोशिशों के महीने से गुज़रते हुए जब हम क़ुरआन करीम की तरफ़ विशेष ध्यान दे रहे होंगे तो फिर आम दिनों में भी इस तरफ़ तवज्जा की आदत पड़ेगी वर्ना अल्लाह तआला की रमज़ान के महीने में क़ुरआन की तरफ़ तवज्जा दिलाने का जो मक़सद है वही फ़ौत हो जाता है। मोमिन तो वही है जो स्थायी रूप से नेकियों को तलाश करता है और उन्हें जारी रखता है। अत: यह महान हिदायत अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से हम तक पहुंचाई है। उसे हमें अपनी हिदायत का माध्यम बनाने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए।

फिर इस आयत से आगे और स्पष्ट कर के यह हिदायत फ़र्मा दी कि रोज़ों की पाबंदी करनी है और मरीज़ और मुसाफ़िर ने छूटे हुए रोज़ों को बाद में पूरा करना है यह ज़रूरी है। सिर्फ फ़िद्या देने से तुम्हें छूट नहीं मिल गई सफ़र और बीमारी में रोज़े ना रखने की छूट देकर अल्लाह तआला ने तुम पर एहसान किया है क्योंकि अल्लाह तआला अपने बंदों पर तंगी नहीं करता। फिर फ़रमाया कि रोज़ों के दिनों को खासतौर पर अल्लाह तआला की बढ़ाई बयान करने और ज़िक्र इलाही और इबादत में गुज़ारो और इस बात पर शुक्र करो कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए हिदायत की ऐसी अज़ीम किताब उतारी जो सार गर्भित और सम्पूर्ण हिदायत है और शुक्र का हक़ उसी वक़्त अदा होता है जब हम इस पर अनुकरण करने वाले बनते हैं। फिर अगली आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे बंदे मेरी तलाश करने वाले मेरी तलाश में खासतौर पर सवाल करते हैं रमज़ान के महीने में इस तलाश में पहले से ज़्यादा बढ़ जाते हैं तो मैं तो क़रीब हूँ उनकी पुकारें सन रहा हूँ और ख़ालिस हो कर मुझ से माँगेंगे तो फिर मैं क़बूल भी करता हूँ लेकिन दुआ क़बूल करवाने के लिए ज़रूरी है कि दुआ करने वाला भी मेरी बात माने। अल्लाह तआला फ़रमाता है मेरे हुक्म को क़बूल करे मेरे पर ईमान मज़बूत करे। यह शिकवा कि हम तो दुआ कर देते हैं, करते हैं, हमने बहुत दुआ की लेकिन अल्लाह तआला ने नहीं सुनी कुछ दिन बाद ही कइयों के यह शिकवे शुरू हो जाते हैं। अगर हम अल्लाह तआला की हिदायत को नहीं सुनते इस पर हम अनुकरण नहीं करते। अल्लाह तआला से मुहब्बत की तलाश नहीं करते उस के वास्तविक बंदे नहीं बनते सिर्फ़ मुश्किल वक़्त आने या किसी तकलीफ़ के वक़्त में ही उसे पुकारते हैं और फिर भूल जाते हैं तो फिर किस तरह शिकवा कर सकते हैं कि अल्लाह तआला ने हमारी दुआएं नहीं सुनी। अत: पहले हमें अपने आपको सँवारना होगा। हाँ अपने आपको संवारने के लिए की कोशिश के साथ अल्लाह तआला के फ़ज़ल को जज़ब करने के लिए दुआ की ज़रूरत होती है इस लिए दुआ भी करनी होगी। फिर अल्लाह तआला हमारी तसकीन और सुकून के सामान भी पैदा फ़रमाएगा किस तरह क़बूलीयत करता है? अगर दिल को तसकीन मिल जाती है सुकून मिल जाता है। तो यह भी क़बूलीयत ही है। फिर अपने ख़ालिस बंदों अपने आशिक़ों को आशिक़ों की दुआओं को क़बूल करने की तरह फिर अल्लाह तआला हमारी दुआओं को भी क़बूल फ़रमाएगा। अत: पहली कोशिश हमारी तरफ़ से होगी रमज़ान के महीने में तो मोमिनों के लिए अपना क़ुरब पाने दुआओं को क़बूल करने के लिए ख़ास प्रबन्ध भी फिर अल्लाह तआला कर देता है। अत: इस में हमें ख़ास कोशिश करने की ज़रूरत है। वर्ना हमें अल्लाह तआला से शिकवे करने का कोई हक़ नहीं कि वह दुआ क़बूल नहीं करता। दुआ के तरीक़े और अपनी हालतों को क़बूलीयत दुआ की कैफ़ीयत वाला बनाने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने किस तरह रहनुमाई फ़रमाई है आप फ़रमाते हैं "यह सच्ची बात है कि जो आदमी कर्मों से काम नहीं लेता वह दुआ नहीं करता बल्कि ख़ुदा तआला की आज़माईश करता है इस लिए दुआ करने से पहले अपनी सारी ताक़तों को ख़र्च करना ज़रूरी है और यही अर्थ इस दुआ के हैं।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 124)

फिर आप फ़रमाते हैं। "यह ख़्याल मत करो कि हम भी हर-रोज़ दुआ करते हैं और तमाम नमाज़ दुआ ही है जो हम पढ़ते हैं।" बेशक नमाज़ जो है दुआ है लेकिन वह कैफ़ीयत जो पैदा होनी चाहिए जो दुआ का वास्तविक मक़सद है वह भी ज़रूरी है फ़रमाया क्योंकि वह दुआ जो मार्फ़त के बाद और फ़ज़ल के माध्यम से पैदा होती है वह और रंग और कैफ़ीयत रखती है वह फ़ना करने वाली चीज़ है वह गुदाज़ करने वाली आग है वह रहमत को खींचने वाली एक चुम्बकीय ख़िचाव है वह मौत है पर आख़िर को ज़िन्दा करती है वह एक तेज़ सैलाब है पर आख़िर को कश्ती बन जाती है एक तूफ़ान है समुंद्र का लेकिन वही तूफ़ान कश्ती बन जाता है बचाने का माध्यम बन जाता है। फ़रमाया कि हर एक बिगड़ी हुई बात इस से बन जाती है और हर एक ज़हर आख़िर इस से तिरयाक़ हो जाता है। अत: वास्तविक दुआ तो इस तरह असर दिखाती है।" आप फ़रमाते हैं

"मुबारक वह क़ैदी जो दुआ करते हैं, थकते नहीं क्योंकि एक दिन रिहाई पाएँगे। मुबारक वह अंधे जो दुआओं में सुस्त नहीं होते क्योंकि एक दिन देखने लगेंगे। मुबारक वह जो क़ब्रों में पड़े हुए दुआओं के साथ ख़ुदा की मदद चाहते हैं क्योंकि

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

एक दिन क़ब्रों से बाहर निकाले जाऐंगे।" अर्थात रुहानी तौर पर मुर्दा हुए हुए हैं।

" मुबारक तुम जब कि दुआ करने में कभी थकते नहीं और तुम्हारी रूह दुआ के लिए पिघलती और तुम्हारी आँख आँसू बहाती और तुम्हारे सीना में एक आग पैदा कर देती है और तुम्हें तन्हाई का ज़ौक़ उठाने के लिए अँधेरी कोठड़ियों और सुनसान जंगलों में ले जाती है और तुम्हें बेताब और दीवाना और व्याकुल बना देती है क्योंकि आख़िर तुम पर फ़ज़ल किया जाएगा। वह ख़ुदा जिसकी तरफ़ हम बुलाते हैं निहायत करीम तथा रहीम लज्जा वाला, सादिक़, वफ़ादार आजिज़ों पर रहम करने वाला है। अत: तुम भी वफ़ादार बन जाओ और पूरे सिदक़ और वफ़ा से दुआ करो कि वह तुम पर रहम फ़रमाएगा। दुनिया के शोर शराबा से अलग हो जाओ और नफ़सानी झगड़ों का दीन को रंग मत दो।".....फ़रमाया दुआ करने वालों को ख़ुदा मोजिज़ा दिखाएगा और मांगने वालों को एक ख़ारिक़ आदत नेअमत दी जाएगी। दुआ ख़ुदा से आती है और ख़ुदा की तरफ़ ही जाती है। दुआ से ख़ुदा ऐसा नज़दीक हो जाता है जैसा कि तुम्हारी जान तुम से नज़दीक है। दुआ की पहली नेअमत यह है कि इन्सान में पाक तबदीली पैदा होती है।" फ़रमाया ".... ग़रज़ दुआ वह अकसीर है जो एक मुट्ठी मिट्टी को कीमिया कर देती है वह एक पानी है जो अंदरूनी गन्दगियों को धो देता है। इस दुआ के साथ रूह पिघलती है और पानी की तरह बह कर अल्लाह तआला के आस्ताना पर गिरती है। वह ख़ुदा के हुज़ूर में खड़ी भी होती है और रुकू भी करती है और सजदा भी करती है। और इसी के प्रतिरूप वह नमाज़ है जो इस्लाम ने सिखलाई है और रूह का खड़ा होना यह है कि वह ख़ुदा के लिए हर एक मुसीबत की बर्दाश्त और हुक्म मानने के बारे में तत्परता ज़ाहिर करती है और इस का रुकू करना अर्थात झुकना यह है कि वह तमाम मोहब्बतों और सम्बन्धों को छोड़कर ख़ुदा की तरफ़ झुक आती है और ख़ुदा के लिए हो जाती है और इस का सजदा यह है कि वह ख़ुदा के आस्ताना पर गिर कर अपने आप को बिलकुल खो देती है अपनी ज़ात को ख़त्म कर देती है और अपने नक़्श वजूद को मिटा देती है। यही नमाज़ है जो ख़ुदा को मिलाती है और शरीयत इस्लामी ने इस की तस्वीर मामूली नमाज़ में खींच कर दिखलाई है ताकि वह जिस्मानी नमाज़ रुहानी नमाज़ की तरफ़ मुहर्रिक हो" ले जाने वाली हो।

(लेक्चर स्यालकोट रूहानी ख़जायन जिल्द 20 पृष्ठ 222 से 224)

अत: यह वह हालत है जो हमें अपने अंदर पैदा करनी होगी ताकि दुआओं की क़बूलीयत के नज़ारे हम देखें। रमज़ान के रोज़ों के साथ इबादत की हक़ीक़त से भी लाभ पाने वाले हों और दुआओं की क़बूलीयत के नज़ारे भी हम देखें। अगर दुआओं की क़बूलीयत में कहीं कमी है तो हमारे अंदर ही कमी है ख़ुदा तआला का फ़रमान कभी ग़लत नहीं हो सकता। इन दिनों में हमें अपनी हालतों की बेहतरी के लिए खासतौर पर दुआएं करनी चाहिऐं अल्लाह तआला जो अपने बंदों के पहले ही बहुत क़रीब है इन दिनों में और भी क़रीब आ गया है। अपनी फ़र्ज़ इबादतों और अपने नवाफ़लों में ख़ालिस हो कर अल्लाह तआला के हुज़ूर हमें झुकना चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें फ़रमाया कि इस महीने के आरम्भिक दस दिन रहमत है मध्य दस दिन मग़फ़िरत का कारण हैं और आख़िरी दस दिन जहन्नुम से नजात दिलाने वाला है।

(कुनज़ुल उम्माल जिल्द 8 पृष्ठ 477 फी फसल सौम शहर रमज़ान हदीस 23714 बैरूत 1985 ई)

अल्लाह तआला हमें अपना वास्तविक बन्दा बनाते हुए अपनी रहमत और मग़फ़िरत की चादर में ले-ले और इस महीने से हम फ़ैज़ पाने वाले हों। इन दिनों में खासतौर पर जमाअत के लिए दुआ करें अल्लाह तआला अहमदियत दुश्मनों की बुराइयां उन पर उलटाए और जहां-जहां भी जमाअत के ख़िलाफ़ मंसूबे बाँधे जा रहे हैं अल्लाह तआला वहां उनकी तदबीरें और उनके मकर उन पर उलटाए। उम्मत मुस्लिमा के लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला उनको ज़ुलम करने और एक दूसरे की गर्दनें काटने से रोके बचाए और ख़ालिस मुसलमान बचाए। ज़माने के इमाम के को यह मानने वाले हों दुनिया के हालात के लिए उमूमी तौर पर भी दुआ करें बड़ी तेज़ी से बहुत बड़ी तबाही की तरफ़ जा रहे हैं अल्लाह तआला दुनिया को अक़ल दे और यह ख़ुदा तआला को पहचानें ताकि इस तबाही से बच सकें।

नमाज़ के बाद मैं दो जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा। उनकी वफ़ात तो दो महीने पहले की है यह लेकिन अभी मेरे सामने विवरण आए हैं। एक पहला नाम है आदरणीय डाक्टर ताहिर अज़ीज़ अहमद साहिब इब्न अर्शदुल्लाह भट्टी साहिब मरहूम इस्लामाबाद का और दूसरे डाक्टर इफ़्तिख़ार अहमद साहिब इब्न डाक्टर ख़्वाजा नज़ीर अहमद साहिब मरहूम अमरीका हैं। यह दोनों फ़तह जंग के क़रीब अपनी ज़मीनों के मामले देखने के लिए गए हुए थे वहां डाक्टर इफ़्तिख़ार अहमद साहिब के एक मुलाज़िम ने 13 मार्च को उन्हें अग़वा करने के बाद दोनों को बेदर्दी से क़तल कर दिया था। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। वहां क़ातिलों को यह फ़िक्र नहीं होती कि हम पकड़े जाऐंगे अगर अहमदी को क़त्ल कर दिया तो क्योंकि अहमदियों का क़तल तो उनके नज़दीक सवाब भी है और फिर यह भी मौलवी का आशीर्वाद भी है कि उनको बचाने की कोशिश करेंगे बल्कि पूरी कोशिश करेंगे तो इस लिहाज़ से कुछ ना कुछ अहमदियत का अंश भी इस में शामिल है तो हम कह सकते हैं कि इस लिहाज़ से शहादत भी है।

डाक्टर ताहिर अज़ीज़ अहमद साहिब 27 नवंबर को 1967 ई को मट्ठा टिवाणा में पैदा हुए थे उनके ख़ानदान में अहमदियत का आरम्भ उनके पड़दादा हज़रत मौलवी नूर अहमद साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो लोधी नंगल ज़िला गुरदासपुर के द्वारा हुआ। हज़रत मौलवी नूर अहमद साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के इस फ़तवा कुफ़्र पर दस्तख़त करने से इनकार कर दिया था जो उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ख़िलाफ़ तैयार किया था और मौलवी-साहिब ने मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी को इस को इस बारे में ख़त लिखा था जो अलहकम की पहली संख्या 10 अक्तूबर 1897 ई में प्रकाशित है

(उद्धरित अल्हकम 8 अक्तूबर 1897 ई पृष्ठ 5-6)

इसी तरह हज़रत मौलवी नूर अहमद साहिब के पिता मौलवी अल्लाह दत्ता भट्टी साहिब आफ़ लोधी नंगल को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने बच्चों मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब और मिर्ज़ा फ़ज़ल अहमद साहिब की तालीम के लिए भी कादियान बुलाया था जिसका ज़िक्र तारीख़ अहमदियत जिल्द अव्वल में है

(उद्धरित तारीख़ अहमदियत भाग 1 पृष्ठ 119)

मरहूम ने मैट्रिक के बाद इस्लामाबाद होमियोपैथिक मैडीकल कॉलेज से डी ऐच ऐम एस का इमतिहान पास किया फिर चट्ठा बख़्तावर इस्लामाबाद में प्रैक्टिस शुरू की। बड़े हर दिल अज़ीज़ डाक्टर थे बेहद अच्छे आचरण वाले थे ग़रीबों का ध्यान रखने वाले थे हमदर्द और अच्छे आचरण के इन्सान थे एक समय तक डाक्टर रहे और घर उनका नमाज़ सैंटर के लिए भी इस्तेमाल होता रहा। ख़िलाफ़त के साथ भी बहुत प्यार का सम्बन्ध था। आपकी वफ़ात पर सैंकड़ों ग़ैर जमाअत मर्द तथा औरतों ने ताज़ियत की और आपकी वफ़ात को एक क़ौमी नुक़्सान क़रार दिया। पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी के अतिरिक्त दो बेटियां और एक बेटा यादगार छोड़े हैं। बेटा उनका यहां लंदन में है राना ख़ालिद साहिब का दामाद है। उनके भाई बड़े भाई फुज़ैल अयाज़ साहिब हैं जो वक़्फ़ ज़िंदगी हैं मुरब्बी हैं पहले ऐम टी ए में ख़िदमत कर रहे थे अब जामिया अहमदिया रब्वह में हैं।

दूसरे जो मरहूम हैं वह हैं डाक्टर इफ़्तिख़ार अहमद साहिब हैं उनका सम्बन्ध तरीगड़ी ज़िला गुजरांवाला से था आप हज़रत मुहम्मद जमाल साहिब सहाबी मसीह मौऊद के नवासे थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत का आरम्भ आपके दादा ख़्वाजा जलालुद्दीन साहिब के द्वारा ख़िलाफ़त सानिया में हुआ। उनके पिता ख़्वाजा नज़ीर अहमद साहिब को तालीमुल इस्लाम रब्वह में कैमिस्ट्री पढ़ाने की तौफ़ीक़ मिली। मरहूम डाक्टर साहिब ने किंग ऐडवर्ड मैडीकल कॉलेज लाहौर से ऐम बी बी एस करने के बाद लगभग तीन साल अहमदिया क्लीनिक कानू नाईजीरिया में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। तीन साल बाद अमरीका चले गए जहां उन्होंने एम डी किया। इस के बाद लगभग पंद्रह साल रहने के बाद वहां से एम डी कर के फिर पाकिस्तान आ गए। फिर पंद्रह साल यहां पाकिस्तान में रहे। फिर तीन साल पहले अमरीका में मुंतक़िल हो गए थे जहां कैलीफोर्निया में आपने अपना इम्तिहान पास कर के वहीं काम शुरू कर दिया। फिर बच्चियों की वजह से पाकिस्तान आ गए। मरहूम बड़े ग़रीबों का ध्यान रखने वाले, ख़िदमत ख़लक़ की भावना में डूबे रहने वाले थे। माली तहरीकों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने वाले थे और एक मुख़लिस इन्सान थे।

पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त तीन बेटियां यादगार छोड़ी हैं। अल्लाह तआला दोनों मरहूमीन के साथ रहमत और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को भी जमाअत और ख़िलाफ़त से जोड़े रखे।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 31 मई 2019 ई पृष्ठ 5-10)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

जमाअत बेल्जियम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हर मैदान में आगे बढ़ने की तौफ़ीक़ पा रही है और तरक्की की नई मंज़िलें तय करते हुए कामयाबियों के नए मैदानों में दाख़िल हो रही है। जलसा सालाना बेल्जियम में विभिन्न हुकूमती मेहमान शामिल हुए । उनमें से कुछ मेहमानों ने अपनी प्रतिक्रियाओं को प्रकट किया।

*मेम्बर आफ़ फ़लीमश पार्लीमैंट और Desel के मेयर Chris van Dijck ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा :अहमदिया मुस्लिम जमाअत के वफ़द कई सालों से मुझ से आकर मुलाक़ात करते हैं। हम हमेशा इन्सानियत , मज़हब की जगह और मज़हब और इस्लाम के बारे में दिलचस्प विचारों का तबादला करते हैं। इस साल भी मुझे मौक़ा मिला कि मैं 15 सितंबर को आपके जलसा सालाना में शिरकत कर सकों और आपके ख़लीफ़ा के साथ मेरी मुलाक़ात भी हुई। जब मैं आपके जलसा सालाना पर पहुंचा तो उस वक़्त आपके दूसरे दिन का इजलास ख़त्म हो रहा था जिसमें 3000 लोगों से अधिक ने शिरकत की थी। मुझे और मेरी कोलीग को जलसा सालाना के प्रबन्धों का संक्षिप्त मगर दिलचस्प दौरा करवाया गया। आपके मज़हब से और परिचय करवाया गया और बतलाया गया कि किस तरह जलसा का प्रबन्ध किया जाता है। हिफ़ाज़ती इंतिज़ामात भी देखे, क़ुरआन करीम के विभिन्न अनुवाद भी देखे, इस कोशिश को भी देखा जो जमाअत अहमदिया समाज की भलाई के लिए करती है ना सिर्फ इधर मगर विभिन्न ग़रीब देशों में भी महरूम लोगों के हालात ज़िन्दगी को बेहतर करने के लिए हज़ारों काम करने वाले ख़िदमत करते हैं। ख़लीफ़ा , जो लंदन में निवास करते हैं उनके साथ मुलाक़ात बहुत प्रभाव करने वाली रही। इस मीटिंग में मेरे साथ पूर्व मेयर दलबीक, मेयर मूल्यन बैक और उक्कल और अन्य लोग भी मौजूद थे। इस मीटिंग में वफ़ादारी, आज़ादी, इंसाफ पसंदी और हर किस्म के उग्रवाद को रद्द करने के लिए ज़ोर दिया गया। ख़लीफ़ा ने इस बात को बहुत एहमीयत दी कि जिस मुल्क में रहा जाए इस से वफ़ादारी और उसके क़ानून की सुरक्षा निहायत अहम बात है। जमाअत अहमदिया अकता और एक दूसरे के लिए सम्मान का एक उदाहरण है। वह ना सिर्फ ज़बानी बल्कि व्यावहारिक भी इस का इज़हार करती है।

*बेल्जियम के जलसा में बरसल्ज़ के पुलिस कमिशनर Christiane De Konick साहिब शामिल हुए। उन्होंने अपनी प्रतिक्रियाओं का इज़हार करते हुए कहा :यह मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है कि मैं यहां मौजूद हूँ। मैं पहले आपकी जमाअत को नहीं जानता था लेकिन यह मेरे पड़ोसी जो कि ख़ुद भी अहमदी हैं उन्होंने मुझे जमाअत का परिचय करवाया। यहां आकर मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि मैं बरसल्ज़ में होने वाले हमलों की वजह से इस्लाम से बहुत बेज़ार हो चुका था। यह बात मेरी समझ से ऊपर है कि लोग मज़हब के नाम पर किसी को कैसे क़तल कर सकते हैं? इस वजह से मैं इस्लाम से बहुत बेज़ार था। लेकिन आपकी जमाअत और आपके माटो मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं की बदौलत मैंने जान लिया कि इस्लाम अमन वाला मज़हब है और बरसल्ज़ में होने वाले हमलों का ज़िम्मेदार इस्लाम को नहीं ठहराया जा सकता। उस के ज़िम्मेदार तो कुछ शिद्दत-पसंद लोग हैं। मैं ऐसा शख़्स नहीं हूँ कि सारे मुसलमानों को बुरा कहूं। मुझे अच्छे और बुरे में तमीज़ मालूम है। जब मैंने यहां आपके जलसा में शिरकत की तो मुझे एक विभिन्न इस्लाम देखने को मिला। एक ऐसा इस्लाम जो अमन पसंद है इस से मुझे बहुत इतमीनान हासिल हुआ।

*मेम्बर आफ़ डच पार्लीमैंट और Kasterlee शहर के मेयर Ward Kennes भी बेल्जियम के जलसा में शामिल हुए उन्होंने कहा :मुझे इस बात की बहुत ख़ुशी हुई है कि मैं एक बार फिर आपके साथ मौजूद हूँ और मुझे एक और जलसा सालाना पर शिरकत करने का मौक़ा मिल रहा है। मुझे विभिन्न समयों पर ख़लीफ़ा को मिलने की भी तौफ़ीक़ मिली और ख़ुत्बे भी सुने हैं। मुझे यह बात पसंद है कि आपके ख़लीफ़ा व्यक्तिगत, फ़ैमिली और दुनिया के अमन के लिए नसीहतें फ़रमाते हैं। ये चीज़ मुझे बहुत हिम्मत देती है। मुझे ख़लीफ़ा को मिलने की तौफ़ीक़ मिली जब मैं अपनी फ़ैमिली के साथ यूके जलसा सालाना पर गया था। और आज भी मुझे जलसा के मौक़ा पर जब ख़लीफ़ा से मुलाक़ात करने का मौक़ा मिला तो मैंने उनका बेल्जियम तशरीफ़ लाने पर शुक्रिया अदा किया कि आप अपनी जमाअत के लोगों को अमन की शिक्षा दे रहे हैं। मैं जब भी आता हूँ तो हैरान होता हूँ कि इंतिज़ामात बहुत अच्छे होते हैं। स्कियोरटी, खाना, इस्तिक़बाल और मेहमान-नवाज़ी हर चीज़ का निहायत उम्दा तौर पर प्रबन्ध किया जाता है और यह बात भी वर्णन योग्य है कि एक बहुत बड़ी संख्या जमाअत की इस में सेवा भाव से ख़िदमत करती है। मेरे शहर में इतने अहमदी अफ़राद तो नहीं हैं लेकिन मेरे क्षेत्र में काफ़ी अहमदी आबाद हैं और मेरा उनके साथ सम्पर्क रहता है। हम अहमदियों के साथ मिलकर चैरिटी वाकस का भी आयोजन करते हैं।

*बेल्जियम के शहर टर्न हाओट के भूतपूर्व मेयर और मौजूदा कौंसिलर Francis Stijnen साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा :मेरी जमाअत अहमदिया के लोगों से पहली मुलाक़ात टर्न हाओट में हुई थी और इस समय से ही जमाअत से निरन्तर सम्पर्क है। इसके माध्यम से आपकी जमाअत के बारे में परिचय हुआ और आपकी शिक्षाओं के बारे में मालूम हुआ। जैसा कि आपको मालूम है कि बेल्जियम में अक्सर लोग कैथोलिक हैं और हमारे देश में आहिस्ता-आहिस्ता और मुस्लमान लोग बेल्जियम आ रहे हैं। इस लिए हमारे लिए ज़रूरी है कि हमें मालूम हो कि जो मुस्लमान लोग हैं उनका असल मज़हब क्या है ताकि उनके साथ मिलकर रहा जा सके। यह पहली बार नहीं कि मैं आपके जलसा सालाना में शिरकत कर रहा हूँ , मैंने इस से पहले जलसा सालाना यूके में भी शिरकत की थी और Antwerpen और विभिन्न शहरों में आपकी जमाअत के प्रोग्रामों में शिरकत की है। मुझे इस बात की ख़ुशी होती है कि आपकी जमाअत अमन की शिक्षा देती है और इस तरह के जलसा सालाना पर सब लोग इकट्ठे होते हैं और मिलकर अमन की तरफ क़दम बढ़ाने की कोशिश करते हैं। अमन का पैग़ाम चाहे छोटे पैमाना पर हो या बड़े पैमाने पर, निहायत ज़रूरी होता है। मैंने आपके ख़लीफ़ा की यूरोपियन असैंबली वाली तक़रीर सुनी है जिसमें आपके इमाम अमन की शिक्षा देते हैं। जब हम अमन की शिक्षा को फैलाएंगे तब ही हम इकट्ठे मिलकर रह सकेंगे। यह बात एक समाज के लिए बहुत ज़रूरी है और आपकी जमाअत के ख़लीफ़ा भी और आपकी जमाअत के मेम्बर भी अमन की शिक्षा को फैलाते हैं और इस पर अनुकरण करते हैं।

*अहमदियों के असाइलम केसिज़ को देखने वाले दो वकील मिस्टर राबर्ट और मस कैटरीन भी बेल्जियम के जलसा में शामिल हुए। उनका कहना है : हमारा किसी अक़ीदा या मज़हब से सम्बन्ध नहीं और पिछली बार जमाअत के पीस सिंपोज़ियम में शिरकत का मौक़ा मिला था। लेकिन इस बार हम आधे घंटे के लिए जलसा देखने आए थे लेकिन वहां अमन वाले माहौल देखकर और लोगों की मुहब्बत देखकर दिल बहुत ख़ुश हुआ और पहली बार इतनी बड़ी संख्या में किसी मुस्लिम कम्यूनिटी के प्रोग्राम में शिरकत का मौक़ा मिला और हम को चार घंटे गुज़रने का भी पता नहीं चला। उनका कहना था : जब जमाअत के ख़लीफ़ा शाम के वक़्त नमाज़ के लिए आए तो हर एक शख़्स ख़ुश था और उनको देखने के लिए सब बेताब थे। इस तरह हम ने भी उनको दूर से देखा कि एक पुरकशिश शख़्स स्टेज पर आया। हर शख़्स अपने ख़लीफ़ा से मुहब्बत का इज़हार कर रहा था।

*इसी तरह Uccle मस्जिद के आर्कीटेक्ट Mr Philip Lammen को अपनी पत्नी के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात की सआदत मिली। उनका कहना था कि : मेरे लिए ख़लीफ़ा के साथ मुलाक़ात एक fascinating तजुर्बा था। ऐसा लग रहा था जैसे हक़ीक़त में Jesus के सामने बैठा हूँ। इसी तरह कहने लगे कि : जैसे बचपन में Jesus का तसव्वुर था इस को जमाअत के ख़लीफ़ा से मिल कर हक़ीक़त में महसूस किया।

इस साल जलसा सालाना बेल्जियम की जो कवरेज मीडीया में हुई है इस से पहले कभी ऐसी घटना नहीं हुई। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जलसा सालाना बेल्जियम की इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के माध्यम बड़े पैमाना पर कवरेज हुई। जलसा सालाना बेल्जियम के बारे में से वहां बलजन टीवी चैनल और तीन अख़बारों में ख़बरें प्रकाशित हुईं जिनके माध्यम 2 मिलियन लोगों तक पैग़ाम पहुंचा। इस के इलावा सोशल मीडीया पर यूट्यूब , फेसबुक ,इंस्टाग्राम और ट्वीटर के माध्यम भी हज़ारों लोगों तक पैग़ाम पहुंचा।

बेल्जियम के नैशनल टीवी " रिंग टीवी" जो कि फ़लीमशन भाषा का है , उस ने भी जलसा के बारे में ख़बर दी। अंदाज़ा के अनुसार इस ख़बर के माध्यम 12 लाख लोग तक जमाअत का पैग़ाम पहुंचा। इस में कहा गया कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत बेल्जियम के जलसा सालाना पर बहुत बड़ी संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया। इस सप्ताह अहमदिया मुस्लिम जमाअत बेल्जियम ने अपना 25 वां जलसा सालाना Brussels Kart Expo, Groot Bijgaarden में आयोजित किया। जमाअत अहमदिया इस्लाम की एक शाख़ है और यह जमाअत दुनिया के

200 से अधिक देशों में क़ायम है, और हर किस्म की दहशतगर्दी को रद्द करती है। इस जलसा में उनके रुहानी इमाम (हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़) ने भी शिरकत की। रिंग टीवी इस प्रोग्राम की कवरेज के लिए गया। अहमदिया मुस्लिम जमाअत बेल्जियम का मेन सैंटर बैतुस्सलाम है जो कि Brusselsstraat दलबीक में क़ायम है। पूरी दुनिया से हज़ारों लोग अपने जलसा सालाना के लिए Brussels Kart Expo, Groot Bijgaardenमें जमा हुए, जहां उनके रुहानी इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब भी शामिल हुए।

यह जलसा पूरी दुनिया में कई मिलियन लोगों के माध्यम देखा जा रहा है, नमाज़ के बाद विभिन्न विषयों पर तक़रीरें हुईं, जैसे शराब पीना और नशे और इंटरनैट के बुरे प्रभाव।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत अपने इस्लामी अक़ीदों और एंटी गरीशन के कामों के कारण से जानी जाती है, और हमारे ख़लीफ़ा कहते हैं एंटी गरीशन के बिना यहां कोई भविष्य नहीं है।

अभी यहां इन छात्रों को जिन्होंने विभिन्न फील्ड्स में विशेष पोज़ीशन हासिल की हैं उन्हें सर्टीफ़िकेट दिए गए हैं, ताकि हमारे नौजवानों की हौसला अफ़ज़ाई हो, ताकि ये अच्छी पढ़ाई करके समाज में अच्छा किरदार अदा कर सकें।

बेल्जियम के एक नैशनल अख़बार De Standaard ने हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की तस्वीर के साथ जलसा की ख़बर प्रकाशित की। यह अख़बार फ़लीमश ज़बान में प्रकाशित होता है और इस की रोज़ाना सरकुलेशन एक लाख बारह हज़ार है। अंदाज़ा के अनुसार इस अख़बार के पाठकों की संख्या साढ़े चार लाख से अधिक है। अख़बार ने लिखा कि हिंद पाक की एक मज़हबी जमाअत अगले साल इस देश की पहली मस्जिद का उद्घाटन करेगी। जमाअत अहमदिया मुस्लिमा अपना मर्कज़ Uccle स्थानान्तरित कर रही है।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत अगले साल के शुरू में हमारे मुल्क में अपनी पहली बाक़ायदा मस्जिद का उद्घाटन करेगी। इमारत लगभग तैयार है। अब तक बेल्जियम में विभिन्न इबादतगाहैं मौजूद थीं लेकिन एक बाक़ायदा मस्जिद की कमी थी। फ़िलहाल दलबीक में उनका मर्कज़ मौजूद है लेकिन प्लान के अनुसार इस जगह की वुसअत या एक मस्जिद को तामीर करना है जहां ज़्यादा अहमदी लोग जमा हो सकें लेकिन भूतकाल में इस तरह के प्लान का विरोध होता आया है।

अत: अहमदी मुसलमानों को एक दूसरी जगह Uccle में मिली। हालाँकि यह भी आसानी से नहीं मिली। जब इस मस्जिद के प्लान पर काम शुरू हुआ तब स्थानीय लोगों की तरफ़ से मुख़ालिफ़त हुई लेकिन अहमदियों को कामयाबी हुई।

जमाअत अहमदिया के अक्सर लोग ये उम्मीद करते हैं कि उनके ख़लीफ़ा मिर्ज़ा मसरूर अहमद मस्जिद के उद्घाटन के लिए हमारे देश दुबारा तशरीफ़ लाएँगे।

बेल्जियम के एक दूसरे नैशनल अख़बार Het Nieuwsblad ने भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की तस्वीर के साथ मुल्क में पहली अहमदी मस्जिद के अगले साल उद्घाटन की हेडिंग के तहत ख़बर दी। यह अख़बार भी फ़लीमश है और इस की रोज़ाना की सरकुलेशन 2 लाख 65 हज़ार बताई जाती है जबकि इस अख़बार के पाठकों की संख्या एक मिलियन से अधिक बताई जाती है। इस अख़बार ने लिखा कि : अमन पसंद जमाअत मुस्लिमा मर्कज़ दलबीक से Uccle मुंतक़िल कर रही है। अहमदिया मुस्लिम जमाअत अगले साल के शुरू में हमारे मुल्क में अपनी पहली बाक़ायदा मस्जिद का उद्घाटन करेगी। इमारत लगभग तैयार है। जमाअत अहमदिया के अक्सर लोग यह उम्मीद करते हैं कि उनके ख़लीफ़ा मिर्ज़ा मसरूर अहमद मस्जिद के उद्घाटन के लिए हमारे देश दुबारा तशरीफ़ लाएँगे।

इस अख़बार ने भी वही ख़बर दी जो अख़बार De Standaard ने दी थी। मगर इस अख़बार ने आख़िर में लिखा कि पुलिस के माध्यम से मालूम हुआ है कि मुसलमानों की जमाअत जिसको सौ से ज़्यादा साल पहले हिन्दुस्तान में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ने बुनियाद रखी , हमारे मुल्क में उन्होंने कभी कोई मसाइल नहीं किए।

Bruzz Magazine मैं यह ख़बर प्रकाशित हुई थी कि :Love for All Hatred for None का प्रचार करने वाली अहमदिया मुस्लिम जमाअत बेल्जियम ने अपना 25वां जलसा सालाना आयोजित किया। इस जमाअत के ज़्यादा लोगों का सम्बन्ध पाकिस्तान से है और ये बतौर रिफ्यूजी हमारे देश में आए हैं और द-ए-लब्बैक , हा सिल्ट और अनटोरपन में उनके केन्द्र हैं। 1908 ई मैं उनमें ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी हुआ। उनका ईमान है कि इमाम महदी और मसीह मौऊद उनकी जमाअत के बानी हैं। इस के अतिरिक्त उनकी जमाअत को विरोध का भी सामना है। इस साल उनके जलसा का विषय हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बतौर अमन के सफ़ीर था।

मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं :जब बलजीयन टीवी और अख़बारों में जलसा के बारे में से ख़बरें प्रकाशित हुईं तो कुछ लोगों ने फ़ोन करके हैरत का इज़हार किया कि दलबीक में चार हज़ार मुसलमान जमा हुए और हमें पता ही नहीं चला। हमें इस इजतिमा से किसी किस्म की कोई तकलीफ़ नहीं हुई और ना ही हमें किसी किस्म का शोर सुना।

बेल्जियम की फैडरल पुलिस के प्रतिनिधि ने अपने प्रतिक्रियाओं का इज़हार करते हुए कहा : हमें यहां दो अढ़ाई सौ लोगों के जलसा में पुलिस स्पोर्ट देनी पड़ती है लेकिन आपके जलसा में चार हज़ार से अधिक लोग जमा थे। पुलिस का यही ख़्याल है कि आपकी जमाअत एक अमन वाली जमाअत है। आप लोगों को पुलिस की ज़रूरत नहीं है।

एम टी ए अफ़्रीक़ा के अधीन जलसा सालाना जर्मनी और बेल्जियम की कवरेज

अफ़्रीक़ा भर में विभिन्न चैनल्ज़ पर जलसा सालाना जर्मनी और जलसा सालाना बेल्जियम की कवरेज हुई। उन में से कुछ चैनल्ज़ ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के सारे ख़िताब प्रसारित किए और कुछ चैनल्ज़ ने जलसा के बारे में से विस्तार से ख़बरें प्रकाशित कीं।

सेरालियून में नैशनल टैलीविज़न सहित तीन टीवी चैनल्ज़ पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के सारे ख़िताब और बैअत का आयोजन प्रसारित हुआ।

घाना में दो टेलीविज़न चैनल्ज़ पर हुज़ूर अनवर के सारे ख़िताब और बैअत का आयोजन प्रसारित हुई।

इसी तरह रवांडा में भी एक टेलीविज़न पर हुज़ूर अनवर के ख़िताब और बैअत की कार्रवाई प्रसारित हुई।

इन चैनल्ज़ के माध्यम 20 मिलियन से अधिक लोगों तक पैग़ाम पहुंचा।

रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ के माध्यम से जलसा जर्मनी की कवरेज

इस साल पहली बार रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ ने भी सोशल मीडिया के माध्यम जलसा सालाना जर्मनी को cover किया। जलसा से दो हफ़्ते पहले ही Caliph in Germany के नाम से एक सीरीज़ शुरू की गई। इसी तरह जलसा के दिनों में भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के दौरा जर्मनी के बारे में डाक्यूमैंटरीज़ और विभिन्न मेहमानों और शामिल होने वालों के दिलचस्प वाक़ियात पर आधारित इंटरव्यूज़ और वीडीयो कलिप्स सोशल मीडीया पर चलाए गए। सोशल मीडिया के माध्यम से कुल 98.1 मिलियन लोगों ने इन पोस्ट्स को देखा।

इसी तरह जलसा सालाना बेल्जियम के मौक़ा पर रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ ने तीन मुख़्तसर सीरीज़ सोशल मीडीया पर चलाईं जिन में नमाज़ , अज़ान, और वुज़ू वग़ैरा के तरीक़ के बारे में वीडीयोज़ शामिल थीं ताकि ग़ैर मुस्लिमों को इस्लामी इबादत के तरीक़ के बारे में आगाही दी जा सके। ये वीडीयोज़ भी ग़ैर मुस्लिमों में बहुत मक़बूल हुईं और काफ़ी संख्या में लोगों ने इन वीडीयोज़ को देखा।

17 /सितंबर 2018 (दिनांक सोमवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह छ: बजे मार्की में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाएं और विभिन्न दफ़्तरी मामलों में मार्ग दर्शन में व्यस्त रहे ।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार सवा ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सैशन में 54 फ़ैमिलीज़ ने और 20 लोग ने व्यक्तिगत तौर पर मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वालों की सामूहिक संख्या 221 थी। बेल्जियम की नई जमाअतों से आने वाले लोग और फ़ैमिलीज़ के इलावा बैरूनी देशों इटली , कैनेडा और सऊदी अरब से आने वाले लोगों ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी लोग ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कृपा

करते हुए शिक्षा हासिल करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाएं मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम सवा दो बजे तक जारी रहा ।

ऐलान निकाह

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मार्की में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने निम्नलिखित तीन निकाहों का ऐलान फ़रमाया।

प्रिया कनज़ा महमूद पुत्री आदरणीय मलिक बिशारत महमूद साहिब बेल्जियम का निकाह प्रिय शुऐब ताहिर क़ुरैशी (फिनलैंड) पुत्र आदरणीय अबदुस्समद क़ुरैशी साहिब के साथ तय पाया ।

प्रिया सारा बैग पुत्री आदरणीय रियाज़ अहमद बेग साहिब का निकाह प्रिय तलहा रशीद पुत्र आदरणीय ख़ुरशीद रशीद साहिब के साथ तय पाया।

प्रिया शह्वाल अहमद पुत्री आदरणीय वहीद अहमद साहिब का निकाह प्रिय एहसानुल हक़ पुत्र आदरणीय इनामुल हक़ साहिब के साथ तय पाया।

निकाहों के ऐलान के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रयाम दुआ कर लें अल्लाह तआला सारे रिश्ते हर लिहाज़ से बरकतों वाले फ़रमाए। एक दूसरे का ख़्याल रखने वाले हों। इनकी नेक औलाद पैदा हो। जमाअत की और धर्म की ख़ादिम हो। दुआ कर लें। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। हुज़ूर अनवर ने कृपा करते हुए दोनों पक्षों को मुसाफ़ा के सौभाग्य से नवाज़ा। उस के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए। पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दफ़्तरी उमूर के कामों में व्यस्त रहे।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार छ: बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस प्रोग्राम में 47 फ़ैमिलीज़ के 217 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से सौभाग्य मुलाक़ात पाया।बेल्जियम की विभिन्न जमाअतों से आने वाली फ़ैमिलीज़ के इलावा फ्रांस से आने वाली एक फ़ैमिली ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी लोग ने अपने आक़ा के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य भी पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने शिक्षा हासिल करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

आज मुलाक़ात करने वालों में विभिन्न अरब देशों से सम्बन्ध रखने वाली नई बैअत करने वाली फ़ैमिलीज़ भी थीं। कुछ फ़ैमिलीज़ अपनी ज़िन्दगी में पहली बार अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पा रही थीं। कइयों ने इस बारे में से अपने प्रतिक्रियाओं का इज़हार भी किया।

जमाअत के लोगों की प्रतिक्रियाएं

तौफ़ीक़ अलजमावी साहिब ने कहा :मुझे हुज़ूर अनवर से पहली बार फ़ैमिली के साथ मुलाक़ात करने का सौभाग्य हासिल हुआ। जब मैं हुज़ूर अनवर के दफ़्तर में दाख़िल हुआ तो मुझे ऐसे महसूस हुआ कि मैं एक अन्य दुनिया में दाख़िल हुआ हूँ। इतनी रूहानियत और नूर वाले चेहरा को देखकर मुझे अपनी सारी परेशानियाँ भूल गईं और मैंने महसूस किया कि जैसे मैंने हुज़ूर को देखा गोया मैंने एक मर्दे ख़ुदा को देख लिया जिससे मेरे ईमान में बहुत इज़ाफ़ा हुआहै। मेरी फ़ैमिली और दोनों बेटियों की भी यही भावनाएं थीं। हुज़ूर अनवर ने हमें बड़े प्यार से अलैसल्लाहो बेकाफिन अब्दहों की अँगूठी भी प्रदान फ़रमाई।

उनकी पत्नी कहने लगीं कि इस से पहले में दूसरे लोगों के हाथों में हुज़ूर की दी हुई अँगूठीयां देखकर यह इच्छा क्या करती थी कि काश हुज़ूर मुझे भी कभी अँगूठी प्रदान फ़रमाएं। और आज मेरी इच्छा का इज़हार किए बग़ैर ही हुज़ूर अनवर ने मुझे एक अँगूठी प्रदान फ़र्मा दी। हम हुज़ूर अनवर के शुक्रगुज़ार हैं कि हमारे जलसा में तशरीफ़ लाए और अल्लाह करे कि हुज़ूर बार-बार हमारे जलसा में शिरकत करने के लिए तशरीफ़ लाएंगे।

मराक़श से सम्बन्ध रखने वाले एक दोस्त मुहम्मद अल-ग़ज़रावी साहिब बयान करते हैं :आज मुझे पहली बार वक़्त के ख़लीफ़ा से मुलाक़ात करने की सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब 8 बज गए और मेरा नाम अभी तक नहीं बुलाया गया तो मैंने सोचा कि शायद में आज हुज़ूर से नहीं मिल सकूँगा और मेरा दिल उस वक़्त रो रहा था। लेकिन जब मेरा नाम पुकारा गया तो मेरे दिल को सुकून हो गया कि मैं भी हुज़ूर से मुलाक़ात कर सकूँगा। जब में हुज़ूर के दफ़्तर में दाख़िल हुआ तो ऐसे लगा कि मेरा दिल रूहानियत से भर गया है। ख़िलाफ़त की एहमीयत ख़लीफ़ा से मिलने से ही मालूम होती है। हम सबको चाहिए कि वक़्त के ख़लीफ़ा से एक सम्बन्ध बनाने के लिए हुज़ूर को बार-बार मिला करें। हुज़ूर का रुहानी चेहरा देखकर जो दिल में एक सुकून पहुंचता है मैं इस को बयान नहीं कर सकता। मुलाक़ात के बाद में अलग हो कर बैठ गया और ख़ुदा तआला का शुक्र अदा करता रहा कि उसने मुझे यह मौक़ा दिया है कि मैं वक़्त के ख़लीफ़ा से मिल सकूं। कोई भी जब मुझे ख़लीफ़ा वक़्त से मिलने के बाद मुलाक़ात की मुबारक देते हैं तो मेरे सामने वही नज़ारा आ जाता है।

मराक़श से सम्बन्ध रखने वाली मिसिज़ सौम्या यासिर साहिबा बयान करती हैं :मुझे इस साल पहली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात करने का मौक़ा मिला। मैं मुलाक़ात से पहले बहुत फ़िक्रमंद थी लेकिन हुज़ूर का नूर वाला चेहरा देखकर मैं बहुत ख़ुश हुई। हुज़ूर से मिलकर ऐसा महसूस हुआ मानो कि मैं अपने ही किसी क़रीबी से लम्बे अर्से के बाद मिल रही हूँ। हुज़ूर ने जिस तरह शफ़क़त का इज़हार फ़रमाया उस का मुझ पर बहुत गहरा असर हुआ।

आईशा मुज़फ़्फ़र साहिबा का सम्बन्ध लबनान से है वह बयान करती हैं :हुज़ूर का एक ख़ास रोब है जिसकी वजह से मुझे आराम महसूस हुआ मैं पहली बार हुज़ूर अनवर से मिल रही थी इसलिए बहुत फ़िक्रमंद थी लेकिन जब में दाख़िल हुई और हुज़ूर ने मुझ से बात शुरू की तो मैंने एक सुकून महसूस किया मानो कि मैं किसी रिश्तेदार से बात कर रही हूँ और इस बात ने मुझे हैरान कर दिया। हुज़ूर अनवर को देखना ही अल्लाह का बड़ा एहसान है। मुलाक़ात से पहले मैंने बहुत सी व्यक्तिगत बातें सोची हुई थीं। लेकिन वक़्त की कमी की वजह से मैंने उन्हें ना करने का फ़ैसला किया। लेकिन में हैरान हूँ कि हुज़ूर मुझ से वही बातें पूछने लगे जो मैंने सोच रखी थीं मानो हुज़ूर मेरे ख़्यालात को देख रहे हैं। मैं हुज़ूर अनवर से मिलकर बहुत बेहतर महसूस कर रही हूँ। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें ख़िलाफ़त के और क़रीब ले आए और हमें ख़िलाफ़त के साय के नीचे रखने के फ़ज़ल को जारी रखे।

अवातिफ़ साहिबा का सम्बन्ध मराक़श से है। उनकी बेल्जियम में हुज़ूर अनवर से पहली मुलाक़ात हुई। वह कहती हैं कि: मेरा सम्बन्ध एक मुतदय्यन घराने से है। मेरे पिता जी मौलवी और एक मस्जिद के इमाम हैं। मैं ने 2008 ई में एक रोया में देखा था कि ऐलान हो रहा है कि कुछ देर में टीवी स्क्रीन पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रकट होंगे। मैं बहुत शौक़ से सामने लगी स्क्रीन को देखना शुरू कर देती हूँ। अन्त में इस पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रकट होते हैं और मैं आपको देखकर बहुत ख़ुश होती हूँ। इस रोया के कुछ रोज़ बाद में घर में बैठी विभिन्न टीवी चैनल बदल बदल कर देख रही थी कि एम.टी ए अलग गया। इस पर उस वक़्त वही तस्वीर आ रही थी जिसे मैंने कुछ रोज़ पहले ख़्वाब में देखा था। इस तस्वीर के नीचे लिखा था अल-मसीह अलमौऊद वल्इमाम अल-महदी। मैंने रोना शुरू कर दिया कि मसीह मौऊद और इमाम महदी आकर चले भी गए और हमें ख़बर भी ना हुई।

मैंने चैनल देखना शुरू कर दिया। लेकिन मेरा दिल मुतमइन ना होता था। मुझे ज़माने का ख़ौफ़ था कि लोग कहेंगे कि अगर यह हक़ है तो हमारे इलाक़े में इस की समझ सिर्फ़ तुम्हें ही आई है। घर वालों का भी ख़ौफ़ था। इस लिए में एम.टी.ए तो देखती रही लेकिन इस से आगे क़दम ना बढ़ा सकी। मैं प्रोग्राम अलहवार अलमुबाशिर देखती और बहुत महज़ूज़ होती थी और मुझे यक़ीन हो गया था कि यही जमाअत इस्लाम का दिफ़ा करने वाली सच्ची जमाअत है। लेकिन लोगों के ख़ौफ़ ने मुझे आगे ना बढ़ने दिया। मैंने तजुर्बा के लिए कभी जमाअत के बारे में बात करने की कोशिश की तो बहुत सख़्त तब्सरे सुनने को मिले।

इसी दौरान मैंने रोया में देखा कि एक सूअर जैसा शख़्स मुझे कहता है कि जिसे तुम हक़ समझ रही हो वह दरअसल झूठ है। इस के कुछ रोज़ बाद ही एक मशहूर मौलवी ने एक टीवी चैनल पर जमाअत के ख़िलाफ़ फ़तवा दिया और उसे बातिल क़रार देकर इस से दूर रहने का कहा। जब मैंने उस की बात सुनी तो कहा कि यही मेरे रोया की ताबीर है। ये लोग मुझे अहमदियत से रोकना चाहते है। बहरहाल उस के बावजूद में बैअत की तरफ़ क़दम ना बढ़ा सकी यहां तक एक रात मैंने ख़ाब में ये अशआर सुने :

اِنِّیۡ مِنَ اللّٰہِ الۡعَزِیۡزِ الۡاَکۡبَرِ حَقٌّ فَھَلۡ مِنۡ خَائِفٍ مُّتَدَبِّرِ

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 13 June 2019 Issue No. 24

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

मैं उस ख़ुदा की तरफ़ से हूँ जो बुज़ुर्ग और इज़्ज़त वाला है। यही बात सच है अत: कोई है जो डरे और सोचे।

جَاءَتْ مَرَابِيْعُ الْهُدٰى وَرِهَامُهَا نَزَلَتْ وَجُوْدٌ بَعْدَهَا كَالْعَسْكَرِ

हिदायत के भारी मींह आ गए और हल्के हल्के मींह तो उतर आए और बड़ा मींह उस के बाद एक लश्कर की तरह आने वाला है।

جُعِلَتْ دِيَارُ الْهِنْدِ اَرْضَ نُزُوْلِهَا نَصْرًا بِمَا صَارَتْ مَحَلَّ تَنَصُّرِ

इन मींहों के उतरने की जगह हिंद की ज़मीन क़रार दी गई है मदद के तौर पर,क्योंकि ईसाई धर्म मुसलमानों में फैलने की यही जगह है।

ये शेअर ऐसे जलाल के साथ सुनाई दिए कि मुझे याद हो गए और जब अगले रोज़ एमटी ए पर यही क़सीदा सुना तो मेरा दिल यक़ीन से भर गया कि यह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे ख़ुद कहा है कि मैं ख़ुदा की तरफ़ से हूँ अत: क्या कोई भय से ग़ौ तथा फ़िक्र करने वाला शख़्स है जो मेरे दावे पर ग़ौर करे।

इस वक़्त मैंने इंटरनैट पर बैअत फ़ार्म भर के भेज दिया जिसका मुझे जवाब भी आ गया। लेकिन मैंने उस के बारे में किसी को ना बताया। उस के बाद मेरी शादी हो गई और में बेल्जियम में आ गई। यहां आकर भी मेरा जमाअत से कोई सम्पर्क ना हुआ। फिर एक रोज़ में घर में आने वाली डाक देख रही थी कि इस में जमाअत की तरफ़ से एक भेजा गया लीफ़लेट भी था। इस को देखा तो फ़ौरन पहचान गई और दिए गए फ़ोन नंबर पर सम्पर्क किया। यूं मेरा यहां जमाअत के साथ सम्पर्क हो गया। अब मैं यहां हर जलसा और इजलास पर आती हूँ। उस के बाद मैंने दोबारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शक्ल में देखा। आप मुस्कुरा रहे थे और मुझे महसूस हुआ कि मेरी बैअत और जमाअत से समपर्क की वजह से आप मुझे से ख़ुश हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के बाद वह अपने जज़बात का इज़हार करते हुए कहने लगीं : मैंने हुज़ूर अनवर को देखने के लिए बहुत इंतिज़ार किया। जब आप बेल्जियम तशरीफ़ लाए , मुझे ऐसे महसूस हुआ मानो कि आसमान आपके आने से ख़ुश है जब आप औरतों की मार्की में दाख़िल हुए , मैं अपने जज़बात पर क़ाबू नहीं पा सकी और मैं रोती रही। मैं अपने सामने एक मर्द ख़ुदा को चलते देख रही थी। मैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इमाम महदी अलैहिस्सलाम को याद कर रही थी। जब मैं आपके दफ़्तर में दाख़िल हुई तो मैंने रोशनी देखी और मैंने ऐसी शान्ति महसूस की जो मैंने पहले कभी महसूस नहीं की और मैंने अमन महसूस किया।

आपके तबस्सुम और मेरी निसबत आपकी तवज्जा ने मेरी तमाम रुकावटें दूर कर दें। मुझे ऐसे लगा जैसे में आपको बहुत अर्से से जानती हूँ मानो कि आप मेरे रिश्तेदार है। मुलाक़ात के बाद मेरा दिल-ख़ुशी से भर गया।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम आठ बज कर पच्चीस मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मार्की में तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार आयोजन आमीन का आयोजन हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 20 बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई। प्रिय हाज़िक़ महमूद , मुवह्हिद अहमद , अयान अहमद मन्नान , प्रिय बुरहा अहमद , प्रिय मुईद अहसन , अतहर मुज्तबा, मिर्ज़ा अज़ीम , नबील अहमद , आक़िब महमूद , प्रिय अहमद ताहा, अताउल ग़ालिब , हसीब अहमद , प्रिय सालिह हयात।

प्रिया सब्रीन अहमद , आइज़ा बुशरा, ज़ीना अहमद , अनौशा वसीम , सारा अहमद , जाज़िबा वसीम , अमतुन नूर अख़तर।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

वर्तमान युग में शान्ति स्थापना के माध्यम

सय्यदना हज़रत ख़लीफतलि मसीह खामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने यार्क यूनिवर्सिटी टोरन्टो में अपने ख़िताब में फरमाया

"अगर हम वास्तव में शान्ति चाहते हैं तो हमें न्याय से काम लेना होगा। हमें न्याय तथा इसांफ को प्राथमिकता देनी होगी। जैसा कि इस्लाम के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हमें दूसरों के लिए वह पसन्द करना चाहिए जो हम अपने लिए पसन्द करते हैं। वैसा ही जोश तथा इरादा दिखाना चाहिए जैसा कि हम अपने लिए दिखाते हैं।

हमें अपनी सोच को बुलन्द करना चाहिए और अपने लाभ के स्थान पर वही देखना चाहिए जो दुनिया के लिए अच्छा है इस युग में शान्ति की स्थापना के यही माध्यम हैं।

मैं अपने दिल की गहराइयों से अल्लाह तआला के समक्ष यह दुआ करता हूं कि वह समस्त पक्षों और सारी क़ौमों को सोच तथा समझ प्रदान करे ताकि वह इन्सानियत की भलाई के लिए निस्स्वार्थ हो कर मिल जुल कर काम करने वाले हों।

(यार्क यूनिवर्सिटी टोरन्टो स्मपोज़ियम, इंसाफ न करने वाली दुनिया में इंसाफ पृष्ठ 28 अक्तूबर 2016 ई

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की नमाज़ तहज्जुद

अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में नमाज़ तहज्जुद की एहमीयत वाज़िह करते हुए फ़रमाता है कि और रात को भी इस क़ुरआन करीम के माध्यम से तहज्जुद अदा किया कर, जो तुझ पर ज़ाइद इनाम है और बिलकुल क़रीब है कि तेरा रब तुझे हमद वाले मुक़ाम पर खड़ा कर दे । (बनीइसराईल: 80)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के बारे में हज़रत अम्माँ-जान बयान फ़रमातीं हैं कि

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम पांचों समय की नमाज़ के सिवा आम तौर पर दो किस्म के नवाफ़िल पढ़ा करते थे एक नमाज़ इशराक़ (दो या चार रकाअत) जो आप कभी कभी पढ़ते थे और दूसरे नमाज़ तहज्जुद (आठ रकआत) जो आप हमेशा पढ़ते थे सिवाए उस के कि आप ज़्यादा बीमार हों लेकिन ऐसी सूरत में भी आप तहज्जुद के वक़्त बिस्तर पर लेटे लेटे ही दुआ मांग लेते थे। और आख़िरी उम्र में कमज़ोरी के कारण प्राय बैठ कर नमाज़ तहज्जुद अदा करते थे ।

(सीरतुल मेहदी हिस्सा 1 रिवायत नंबर 3)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में एक दूसरी रिवायत में हज़रत अम्माँ-जान फ़रमातीं हैं ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आम तौर पर सुबह की नमाज़ के बाद थोड़ी देर के लिए सो जाते थे क्योंकि रात का ज़्यादा हिस्सा आप जाग कर गुज़ारते थे जिसकी वजह यह थी कि अव्वल तो आप प्राय समय रात के वक़्त मज़ामीन लिखने पड़ते थे जो आप प्राय बहुत देर तक लिखते थे दूसरे आपको पेशाब के लिए भी कई दफ़ा उठना पड़ता था उस के इलावा नमाज़ तहज्जुद के लिए भी उठते थे ।

(सीरतुल महदी हिस्सा 1 रिवायत नंबर 4)

अव्वल रात दीनी ख़िदमात करते गुज़र जाती और आख़िर रात तहज्जुद पढ़ते। नमाज़ तहज्जुद के महत्तव के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं।

मियां ख़ैरुद्दीन सैखवानी ने लिख कर मुझ से बयान किया कि एक बार हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मुश्किले क्या चीज़ हैं ? दस दिन कोई नमाज़ तहज्जुद पढ़े। चाहे कैसी ही मुश्किल हो ख़ुदा तआला हल कर देगा।(ان اللہ علی کل شئی قدیر)

(सीरतुल मेहदी हिस्सा 4 रिवायत नंबर 1253)

नमाज़ तहज्जुद का वक़्त ऐसा होता है कि बंदा होता है और ख़ुदा होता है। अल्लाह हमें नमाज़ तहज्जुद पढ़ने की तौफ़ीक़ दे आमीन।

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad